चैतन्य लहरी

खण्ड XI | मई-जून 1999 | अंक 5 & 6

अपनी सारी जिम्मेदारियां, सारी समस्याएं इस परमेश्वरी शक्ति (परम चैतन्य) को सौंप दें। यह अत्यन्त शक्तिशाली है, अत्यन्त योग्य है और कुछ भी कर सकती है।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी।

(सहस्रार पूजा, 1998)

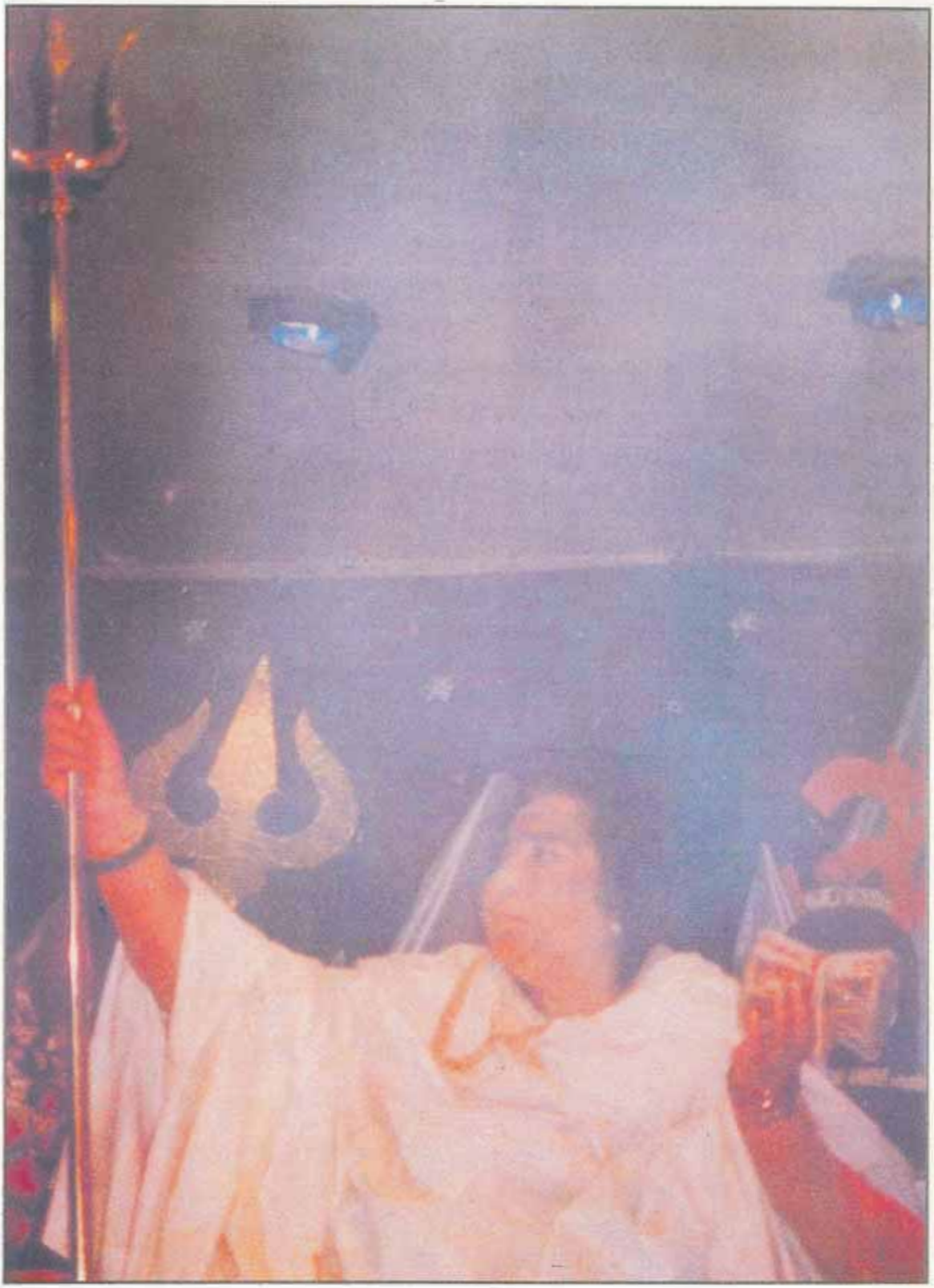

इस अंक में

क्रम संख्या		पृष्ठ नं.
1.	सम्पादकीय	3
2.	76वीं जन्म दिवस पूजा (21.3.99)	5
3.	76वाँ जन्म दिवस अभिनन्दन समारोह (19.3.99)	9
4.	वंदे मातरम् पर श्रीमाताजी का प्रवचन (19.3.99)	16
5.	देशभक्ति सहजयोग का वर्णन (19.3.99)	17
6.	गुडी-पड़वा पूजा (18.3.99)	18
7.	नवरात्रि-पूजा (27.9.1998)	20
8.	आदिशक्ति-पूजा संगोष्ठी (1998)	32
9.	विश्व सहज समाचार-	
	दक्षिणी अफ्रीका से समाचार।	33
	वेस्टइंडीज से समाचार।	34
	सृजनात्मक अभिव्यक्तियाँ।	35
	सहजयोग से अस्थमा रोग का इलाज।	35
	डॉक्टर यू.सी. राय की यूरोप यात्रा।	35
	इज़राइल दिव्य चमत्कार।	42
10.	वर्ष 1999 के पूजा कार्यक्रम	44

सम्पादक : योगी महाजन

प्रकाशक : विजय नालगिरकर
162, मुनीरका विहार,
नई दिल्ली-110 067

मुद्रक : अभिनव प्रिन्ट्स, दिल्ली-34,
फोन : 7184340

सम्पादकीय

सहजयोगियों के लिए गणपति पुले वार्षिक तीर्थ यात्रा है। तीर्थ यात्रा की प्रथा सभी धर्मों में प्राचीन काल से है। परन्तु अब इसने आध्यात्मिक भ्रमण का रूप धारण कर लिया है क्योंकि पवित्र स्थल या तो धनार्जन का स्थान बन गए हैं या इन पर रुढ़िवादी लोगों ने कब्जा कर लिया है। दूसरे, आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किए बिना तीर्थ यात्री स्वयंभुओं की चैतन्य लहरियाँ आत्मसात नहीं कर सकते। संभवत: शास्त्रों में वर्णित धर्म का कोई कार्य कर पाने का अन्धविश्वास उन्हें कुछ शक्ति एवं सन्तोष प्रदान करता हो। उदाहरणार्थ उत्तरी भारत के लोग अपने बच्चों के मुण्डन संस्कार के लिए देवी चिन्तपूर्णी, मन्सा देवी, नैना देवी, चामुण्डा देवी, ज्वालामुखी, काँगड़ा मन्दिर और वैष्णोदेवी की तीर्थ यात्रा करते हैं। देवी सती के अंग विखण्डन होने के पश्चात् उनके शरीर के भिन्न भागों से ये स्थान आशीर्वादित हुए। सहजयोगी तो इन पावन स्थलों की चैतन्य लहरियों का आनन्द लेगा परन्तु एक सर्वसाधारण जिज्ञासु या तीर्थयात्री के लिए यह मात्र आध्यात्मिक भ्रमण ही है। पुरानी कहावत है, 'नौ सौ चूहे खाकर बिल्ली हज को चली'।

सहजयोगियों ने तीर्थ यात्रा के वास्तविक अर्थ को अनुभव किया है। वर्ष 1998 में नासिक के तीन सौ सहजयोगियों ने अपने जीवन की महानतम तीर्थ यात्रा की तैयारी शुरु की। दिसम्बर में गणपति पुले जाकर वे श्री आदिशक्ति की पूजा करेंगे और इस पावनतम अवसर के लिए उन्होंने स्वयं को शुद्ध करने का निर्णय किया। दस महीनों तक सभी ने प्रतिदिन दो बार पानी-पैर क्रिया की, तीन मोमबत्तियों से स्वयं को साफ किया और सामूहिक ध्यान धारणा की। श्री माताजी के टेप सुनने और जन-कार्यक्रमों के अतिरिक्त नियमित रूप से प्रात: काल ध्यान-धारणा की। गर्म जिगर वाले जिन सहजयोगियों के पास घर में बर्फ उपलब्ध न थी उन्होंने बर्फ के लिए फ्रिज किराए पर लिए। गणपति पुले जाकर जितनी गहनता पूर्वक उन्होंने देवी की पूजा की और सामूहिक रूप से जितने प्रेम का आनन्द लिया उससे वे अभिभूत हो गए। वहाँ पर उन्हें शुद्धिकरण में अपना बहुमूल्य समाय बर्बाद नहीं करना पड़ा। उनकी कुण्डलिनी पर उनके बाएं और दाएं को शुद्ध करने का बोझ न था। अत: कुण्डलिनी आदि-कुण्डलिनी के प्रेम सागर में पूरी तरह डूब सकती थी। यह वास्तविक तीर्थ यात्रा थी। वास्तविक तीर्थ यात्रा में अनन्त देवी आशीर्वादों की वर्षा होती है। सबसे अधिक विवाह नासिक के सहजयोगियों के हुए। श्री माताजी चैतन्य लहरियाँ देखकर विवाह निश्चित करते हैं, व्यक्ति के स्थान को देखकर नहीं। सामूहिकता को यह आशीष स्वत: ही प्राप्त है।

वास्तविक तीर्थ यात्रा में व्यक्ति केवल भौतिक आशीर्वाद ही नहीं प्राप्त करता, सामूहिक चेतना का अनुभव करने का आशीष भी उसे मिलता है। सामूहिक चेतना से पथ-प्रदर्शन प्राप्त करके व्यक्ति के कार्य सामूहिक हितार्थ हो जाते हैं।

मनुष्य स्वत: ही नि:स्वार्थ होकर सामूहिक रूप से परिपक्व हो जाता है। सामूहिक चेतना की तीर्थ यात्रा कर लेने के पश्चात् व्यक्ति स्वयं को परमेश्वरी चेतना के कार्यक्रम का एक अंश मानने लगता है। उदाहरण के रूप में 20 फरवरी 1999 को मुम्बई में श्रीमाताजी का एक बहुत ही शानदार जन कार्यक्रम हुआ। तुरन्त नासिक की सामूहिकता गतिशील हुई और नासिक में एक विशाल जन कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें

30 मि.मी. के पर्दे पर मुम्बई कार्यक्रम का श्रीमाताजी का वीडियो टेप दिखाया। ऐसा प्रतीत हुआ, मानो साक्षात् श्रीमाताजी वहाँ उपस्थित हों। ये सत्य है कि, जब भी श्रीमाताजी कहीं पर जन कार्यक्रम या पूजा करती है, तो यह विश्व सामूहिकता के लिए सामूहिक घटना होती है। सामूहिक चेतना के इस स्रोत से एकतार होकर सहजयोगी इसकी चैतन्य लहरियों का आनन्द ले सकते हैं। विद्युत माध्यमों के जरिए श्री माताजी का संदेश तुरन्त प्रसारित किया जा सकता है और सभी लोग वही आन्तरिक अनुभूति, आनन्द एवं गहनता अनुभव कर सकते हैं। एक सहजयोगी से वे जो कहती हैं, वह पूर्ण सामूहिकता के लिए संदेश होता है। बहुत से सहजयोगियों ने अनुभव किया है कि जब श्री माताजी किसी व्यक्ति का कोई चक्र साफ करती है, तो स्वत: ही पूरी सामूहिकता का वह चक्र शुद्ध हो जाता है। दूसरी ओर एक व्यक्ति की नकारात्मकता पूरी सामूहिकता में प्रवेश कर जाती है परन्तु सामूहिकता यदि दृढ़ है तो सहस्रार पर से नकारात्मकता निकल जाती है। हमारा कार्यक्रम व्यक्ति से सामूहिकता के स्तर तक आ जाता है और हम उनके (श्रीमाताजी के) शाश्वत अस्तित्व का अंग-प्रत्यंग स्वयं को मानने लगते हैं। तब उनका शाश्वत अस्तित्व हमारी रक्षा करने लगता है। पिछले वर्ष नए जर्सी आश्रम में एक आश्चर्य चकित कर देने वाली घटना घटी। तरणताल में एक सहजयोगी लड़का डूब गया। उन लोगों ने बताया कि तभी कनैला से श्री माताजी का फोन आया और श्री माताजी ने बन्धन दिया। डॉक्टरों के अनुसार कुछ घण्टे मृत अवस्था में रहने के पश्चात् वह लड़का जीवित हो गया। परन्तु श्री माताजी ने बताया कि उन्होंने तो टेलीफोन किया ही नहीं। उन्हें तो नए जर्सी आश्रम का टेलीफोन नम्बर ही नहीं मालूम। हम सब जानते हैं, कि श्रीमाताजी कभी टेलीफोन नहीं करतीं। ये सब चमत्कार नहीं है ये तो उनके अनन्त आशीर्वाद हैं। अब हम महसूस कर सकते हैं कि वे हमारी कितनी रक्षा कर रही हैं। जहाँ तक सम्भव हो हमें स्वयं को सामूहिक चेतना के क्षेत्र में ही बनाए रखना चाहिए।

बहुविध हम सामूहिक रीति-रिवाजों का पालन करते हैं। उदाहरणार्थ एक सहजयोगी पूरी सामूहिकता की ओर से श्रीमाताजी को माल्यार्पण करता है। इसी प्रकार वे भी किसी अवसर विशेष पर आशीष प्रसारण करने के लिए किसी विशेष माध्यम को चुन लेती हैं, तो अन्य लोगों को इसका बुरा नहीं मानना चाहिए कि वह व्यक्ति उनके साक्षात् के बहुत समीप है। सत्य तो ये है, कि जो भी उन्हें हृदय में धारण करता है वे उसके समीप हैं। वे यदि अगुआ से प्रसन्न हैं, तो इसका अर्थ ये हुआ कि वे पूर्ण सामूहिकता से प्रसन्न हैं। गणपति पुले में अपने देदीप्यमान सिंहासन पर बैठे हुए उनकी एक मुस्कुराहट वहां बैठे हुए हजारों लोगों के हृदय खोल देती है। उन्हें जो भी प्रसन्न करता है, उसे हजारों आशीष प्राप्त होते हैं। गणपति पुले की चमत्कारिक शामों को, उनकी कृपा से हम आकाश की बुलंदियों को छू लेते हैं।

श्री मार्कण्डेय से लेकर श्री आदिशंकराचार्य तक सभी महान सन्तों ने प्रार्थना की कि,"हे देवी स्वयं को प्रसन्न करने का ज्ञान हमें प्रदान करें।" श्री माताजी किसी भी चीज की आशा नहीं करतीं और अत्यन्त सुगमता पूर्वक प्रसन्न हो जाती हैं। अपनी अनन्त उदारता में वे किसी की भी प्रशंसा कर सकती हैं, किसी को भेंट दे सकती हैं। इसके विषय में ईर्ष्या करने का कोई कारण नहीं। जब हम एक ही शरीर के अंग-प्रत्यंग हैं तो सामूहिक कानों से सुनी प्रशंसा से हम झूम उठते हैं और फैलाए हुए हाथों से जो वरदान हमें मिलता है, उसका आनन्द लेते हैं। प्रेम के इन सभी कार्यों में हमारी परमेश्वरी माँ हमारी आत्मा को छू लेती हैं और उनके असीम प्रेम का आनन्द लेते हुए, हम उनकी जय जयकार कर उठते हैं।

श्री माताजी द्वारा

सहजयोग का वर्णन

इस नृत्य का अन्तिम भाग आप सबने देखा। यह उस समय का दृश्य है जब ऊधो श्री कृष्ण के प्रेम में खोई हुई गोपियों से मिलने गए थे। ऊधो ने गोपियों से कहा कि वे श्री कृष्ण के साक्षात् का विचार छोड़कर योग एवं ज्ञान का मार्ग अपना लें। यह अत्यन्त नीरस मार्ग है, ऐसा मैं सोचती हूँ। गोपियों ने कहा, "नहीं हम योग नहीं करना चाहते। हम तो पहले से ही उनसे एक हैं। हम उनके शरीर में हैं और वे हमारे शरीर में हैं। हम तो उनसे पूरी तरह से एक हो चुके हैं अत: योग की क्या आवश्यकता है?"

हमारा सहजयोग भी ऐसा ही है। हम सब परस्पर प्रेम करते हैं, मात्र प्रेम। इस नृत्य में भी नृत्यांगना ने यही दर्शाया है। अत्यन्त सूक्ष्मता पूर्वक उसने इस भाव को प्रकट किया है। हमें भी यही जानना है कि सहज योग प्रेम के अतिरिक्त कुछ नहीं। हमारे बीच पारस्परिक, पूर्णत: शुद्ध प्रेम। संस्कृत में हम इसे 'निर्व्याज्य' कहते हैं। प्रेम के बदले में व्यक्ति किसी चीज की आशा नहीं करता, केवल प्रेम करता है और यही प्रेम वास्तविक योग है।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

■ ■ ■

76वीं जन्मदिवस पूजा, दिल्ली 21.3.99
परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (हिन्दी)

आप लोगों का ये प्यार देखकर के मेरा हृदय भर आया है और ये सोचकर कि प्यार कितनी बड़ी शक्ति है, इससे लोग इतने आकर्षित होते हैं और आनन्दित होते हैं। ये बड़ी आश्चर्य की बात है। इस कलियुग में प्यार का महात्मय इतना तो किसी ने नहीं देखा होगा। मैं सोचती हूँ कि इसको देखकर के आप सभी लोग अपना प्यार बढ़ाना सीखें। वो चीज़ बहुत आसान है। वो इस प्रकार कि आप ध्यान करें, सुबह-शाम। तो आपके अन्दर के जो बुरे विचार हैं, जिससे आप ईर्ष्या करते हैं और क्रोधित होते हैं और छोटी-छोटी बात पे बुरा मान जाते हैं, ऐसे सारे विचार खत्म हो जाएंगे। उसके बाद बच क्या जाता है। निर्मल प्रेम। इस प्रेम से आप सारे संसार को एक नया जीवन दे सकते हैं।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें

76वीं जन्म दिवस पूजा (दिल्ली 21.3.99)
परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन (अंग्रेजी)

हिन्दी प्रवचन में मैंने बताया, एक व्यक्ति के प्रेम की अभिव्यक्ति आप यहाँ बहुत सी आँखों में देख सकते हैं। आपके उत्साह को देखकर मेरा हृदय प्रेम से भर गया, महान प्रेम से। तो हम देख सकते हैं कि यह प्रेम कितना महान है! यदि आप सच्चे हृदय से सुबह शाम ध्यान करें तो सभी प्रकार की दुर्भावनाओं, बुराइयों और आत्मघातक तत्वों को भी सहजयोग में बड़ी सुगमता से सुधारा जा सकता है और नियंत्रित किया जा सकता है। परन्तु ध्यान करते हुए आपको अपनी घड़ियाँ नहीं देखनी चाहिए, आनन्द लेना चाहिए, ध्यान का आनन्द लेना चाहिए। यह सोचकर कि आपके आत्मसम्मान को चुनौती दी गई है। छोटी-छोटी चीजों के लिए बुरा मानने, चिड़चिड़ाने की अपेक्षा ध्यान आपको अन्य लोगों से प्रेम करने, उन्हें क्षमा करने की शक्ति देगा। कई बार हम लोगों के बिना किसी दोष के, उनके प्रति आक्रामक हो उठते हैं, बहुत आक्रामक। सबसे अच्छा तरीका ये है कि हम दूसरे व्यक्ति की चैतन्य लहरी को देखें। चैतन्य लहरियाँ यदि खराब हैं तो लड़ने का कोई लाभ नहीं। इससे और अधिक भ्रम पैदा हो जाएगा। जिस व्यक्ति की चैतन्य लहरियाँ खराब हैं उससे न तो आप झगड़ा कर सकते हैं और न ही उसे नियंत्रित कर सकते हैं। जो व्यक्ति स्वयं को बहुत महत्वपूर्ण मानता है उसे शान्त करने की या उससे समझौता करने की या उसके मिथ्या अभियान को बढ़ावा देने की आपको कोई आवश्यकता नहीं। ऐसा करके आप उसे और अधिक बिगाड़ते हैं। तो अत्यन्त मधुर एवं भिन्न प्रकार से अपने प्रेम का प्रदर्शन करना ही सर्वोत्तम है।

मैं एक उदाहरण दूँगी जिसे पहले भी बहुत बार दे चुकी हूँ। एक बार मैं गगनगिरी महाराज के पास गई वे एक ऊँचे पहाड़ पर रहते थे जहाँ कार आदि वाहन न जा सकते थे। अतः मुझे पैदल जाना पड़ा। सभी सहजयोगी पूछने लगे, "श्री माताजी, आखिर आप वहाँ क्यों जा रही हैं?" मैंने कहा, "आप चैतन्य लहरियाँ देखें, अच्छी चैतन्य लहरियाँ आ रही हैं न! इसीलिए मैं जा रही हूँ।" गगनगिरी ने बहुत से लोगों को मेरे विषय में बताया था कि आदिशक्ति मुम्बई में अवतरित हुई हैं, आप लोग मेरे पास क्यों आते हैं? उन लोगों ने ये सब हमें बताया। मैंने सोचा कि मुझे इस सन्त से मिलना चाहिए और मैं उससे मिलने के लिए उसके स्थान पर गई। उसका वर्षा पर नियंत्रण था, वर्षा को वह नियंत्रित कर सकता था। जब मैं वहाँ पहुँची तो एक शिला पर बैठा गुस्से से वह अपना सिर हिला रहा था। वर्षा इतने जोर से हो रही थी कि जब मैं उसकी कुटिया पर पहुँची तब तक पूरी तरह से नहा चुकी थी। मैं उस गुफा में गई जहाँ वह रहता था और वर्षा पर क्रोध से भरा हुआ। वह अन्दर आया। कहने लगा, "माँ आपने मुझे वर्षा रोकने क्यों नहीं दी?" मैंने कहा, "मैंने ऐसा कुछ नहीं किया।" "नहीं आपने ऐसा किया क्योंकि मैं तो सदैव वर्षा को नियंत्रित करता हूँ। आज मेरे निमंत्रण से आप यहां आ रही थीं तो इस वर्षा को मर्यादा में रहना चाहिए था।" मैंने कहा," नहीं, नहीं, उसने कोई अपराध नहीं

किया" "तो ऐसा क्यों हुआ?" वह अत्यन्त क्रोधित था। मैंने कहा तुम शान्त हो जाओ, मैं बताती हूँ कि क्या हुआ। देखो तुम एक सन्यासी हो और तुम मेरे लिए एक साड़ी खरीद कर लाए हो। सन्यासी से तो मैं साड़ी ले नहीं सकती। तो वर्षा ने मेरे इस कार्य को आसान कर दिया है। अब मैं पूरी तरह भीग गई हूँ इसलिए तुम्हारी साड़ी मुझे लेनी ही पड़ेगी। मेरे प्रति उसका प्रेम उमड़ पड़ा और उसकी आँखों से अश्रुधारा वह निकली। मेरे चरणों पर वह गिर गया कहने लगा माँ प्रेम की महानता मुझे अब पता लगी है। किस प्रकार यह सांसारिक चीज़ों तथा शुष्क आचरण से हटाकर एक ऐसे स्थान पर ले जाता है जहाँ आप प्रेम की वर्षा का आनन्द लेते हैं। मैं यह एक कहानी आपको सुना रही हूँ परन्तु इसके पीछे छिपा सार ये है कि आप अपने प्रेम, शुद्ध प्रेम की युक्तियों को आजमाएं और देखें कि यह किस प्रकार कार्य करती है। शनैः शनैः आप इनको उपयोग करना सीख जाएंगे। ऐसा करना आप छोड़ें नहीं। मैं जानती हूँ कि कुछ लोग अत्यंत कठिन होते हैं मैं इस बात से सहमत हूँ । परन्तु कम से कम उन लोगों पर तो इस प्रेम को आजमाएं जो बहुत कठोर नहीं हैं। आप हैरान होंगे, इस प्रकार आपको अच्छी संगति, बहुत से मित्र और मित्रता प्राप्त हो जाएगी, जैसे हमें सहजयोग में प्राप्त हुई है। पहली बार जब मैं दिल्ली आई थी तो इस स्थान से मुझे बहुत घबराहट हुई क्योंकि बहुत ही थोड़े सहजयोगी थे। न जाने क्यों वे मेरी पूजा करने चाहते थे। हो सकता है मुम्बई के लोगों ने उन्हें कुछ बताया हो। वे कुमकुम तथा पूजा का अन्य सामान छोटी-छोटी प्लास्टिक की बोतलों में ले आए। उनकी अज्ञानता के कारण मैं तो सिकुड़ गई। मैंने सोचा अब क्या करें? क्या होगा? पर आज देखें वही दिल्ली कितनी महान, सुन्दर एवं उत्साह पूर्ण हो गई है। अपने झण्डे उठाए हुए मैंने उन्हें देखा। मैं नहीं जानती थी कि झण्डों का इस प्रकार का जुलूस यहाँ होगा, यद्यपि एक दो बार ऐसा जुलूस कबैला में अवश्य निकाला गया। किस तरह से वे एक दूसरे का आनन्द उठा रहे थे! यह वास्तव में प्रशंसनीय है आप यदि प्रेम का आनन्द लेने लगेंगे तो कोई अन्य चीज आपको अच्छी नहीं लगेगी। परन्तु प्रेम अन्य लोगों के लिए होना चाहिए केवल अपने लिए नहीं। आप देखेंगे कि आपका शरीर, मस्तिष्क और विचार, सभी शक्तियाँ अन्य लोगों के लिए, अपने लिए नहीं, प्रेम का सृजन करने में लगी रहेंगी। जिस प्रकार आप अन्धेरे में देख नहीं पाते और थोड़ा सा भी प्रकाश हो जाए तो वह चारों ओर फैल जाता है। इसी प्रकार सहजयोग में व्यक्ति का पूरा दृष्टिकोण ही परिवर्तित हो जाता है। प्रकाश से किसी को यह नहीं बताना पड़ता कि तुम्हें चहुँ ओर फैलना है। आप सब भी अब साक्षात्कारी हैं, प्रेम के प्रकाश से प्रकाशमान। प्रेम का वह प्रकाश स्वतः चहुँ ओर फैलता है स्वतः, सहज। युवा शक्ति को नाचते और आनन्द लेते देखकर तो मैं भाव-विभोर हो गई। यह अत्यन्त महान आशीष है क्योंकि आजकल हमारे युवा बच्चे, युवा पीढ़ी भटक रही है। अन्य देशों की तरह से तो वे नहीं भटक रहे हैं परन्तु उन्हें बिगाड़ने और भ्रष्ट पाश्चात्य व्यक्तित्व बनाने का प्रयत्न जोरों पर है। परन्तु अब मैंने देखा है कि युवा शक्ति के ये सहज बच्चे अपनी जाति-पाति को भुलाकर एक दूसरे की संगति का आनन्द ले रहे हैं। यह इस देश में तथा सभी देशों में घटित होना आवश्यक है। अत्यन्त आवश्यक है कि हम एक होकर एक दूसरे की एकाकारिता का आनन्द लें। एक

दूसरे का आनन्द यदि हम नहीं लेते तो हम समुद्र से बाहर पड़ी उस बूँद की तरह से हैं जो किसी भी समय सूख सकती है। परन्तु समुद्र के अंग-प्रत्यंग यदि आप बन जाएं तो उसकी हर लहर का आनन्द आप उठाते हैं। आप उसके अंग-प्रत्यंग हैं क्योंकि अब आपका कोई भिन्न व्यक्तित्व नहीं है। कोई भी चीज़ जो हमें हमारे समाज, संस्कृति, आचरण या व्यक्तिगत जीवन में भिन्नता-विशिष्टता दे उसे नियन्त्रित कर लिया जाना चाहिए। इससे पारिवारिक जीवन से लेकर राष्ट्रीय जीवन और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन तक की बहुत सी समस्याओं का समाधान हो जाएगा। तो भिन्नता प्रदायक ऐसी भावनाएं नियन्त्रित कर लेनी चाहिए जो हमें अपना घर, अपना राज्य, अपना राष्ट्र प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती हों। शनैः शनैः सभी राष्ट्र एक हो जाएंगे। मुझे इसका पूर्ण विश्वास है क्योंकि महान समय आ रहा है और अधिकारी वर्ग के बहुत से लोग सहजयोग को अपना लेंगे। एक बार जब ऐसा हो जाएगा तो स्थिति बहुत भिन्न हो जाएगी। आज उनमें यह बात नहीं है, वे सहजयोगी नहीं हैं। हमारे प्रेम के इस महान आन्दोलन का उन्हें बिल्कुल ज्ञान नहीं है। यही कारण है कि वे सभी कुछ अलग से चाहते हैं। वे नहीं जानते कि उनके आस पास की गर्मी उन्हें झुलस देगी या भयानक बारिश उन्हें बहा कर ले जाएगी या पृथ्वी माँ उन्हें निगल लेंगी। अतः जितने चाहे भेदभाव हों हमें एक होकर रहना है। आखिरकार आप भिन्न परिवारों में जन्मे हैं, सभी एक परिवार में तो जन्म नहीं ले सकते। परन्तु अब आप सहजयोग परिवार के हैं और सहजयोग परिवार एक है। यह भिन्न अस्तित्व या भिन्न विशेषताओं में विश्वास नहीं करता। हम सब परस्पर एक हैं और बाह्य भेदभावों की हमें कोई परवाह नहीं। मैं बहुत अधिक प्रभावित हुई क्योंकि नया वर्ष हमारे लिए बहुत सी चुनौतियाँ लेकर आ रहा है जिन्हें हमें स्वीकार करना होगा। हमें स्वीकार करना होगा कि कलियुग समाप्त हो गया है। हमें सत्ययुग स्थापित करना है। इसके लिए आप सबको, सभी देशों के सहजयोगियों को सोचना चाहिए। किस प्रकार आप यह कार्य अपने देश में तथा अन्य देशों में कर सकते हैं? अन्य देशों में क्या समस्याएं हैं? बाहर की ओर दृष्टि डालें, केवल अपने तक ही इसे सीमित न करें, ताकि आप ये न कहते रहें मुझे ये चाहिए, मुझे वो चाहिए। हमें समझना चाहिए कि अन्य लोगों की आवश्यकता क्या है? हमारे समाज, राष्ट्र और विश्व के लोगों की क्या आवश्यकता है। अच्छा होगा कि आप उनकी आवश्यकता को लिख लें। ऐसा करना बेहतर होगा, यह कार्य करेगा। हो सकता है कि इसमें शुद्धिकरण किया जाए परन्तु सहजयोगियों के लिए आवश्यक है कि बैठकर लिख लें कि विश्व की क्या आवश्यकता है और क्या किया जाना चाहिए? आप सबके लिए इस प्रकार के एक रूप समाज, जैसा आज यहाँ पर है, की आकांक्षा करना आपके लिए वास्तव में बहुत अच्छा विचार है। आप हैरान होंगे, कि एक दिन हम अपने प्रेम, सम्मान और सेवा से बाकी सभी लोगों का पथ-प्रदर्शन एवं नेतृत्व करेंगे। अतः यह समय बहुत महत्वपूर्ण है, आप सब लोगों को इस दिशा में सोचना चाहिए। हार्दिक धन्यवाद।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

♦ ♦ ♦

76वां जन्मदिवस अभिनंदन समारोह

परम पूज्य माताजी श्री निर्मलादेवी का प्रवचन (19.3.99)

सभी सत्य साधकों को मेरा नमस्कार। मेरे जन्मदिवस के अवसर पर इतना कुछ कहा जाना मुझे संकोच में डाल रहा है क्योंकि जो कुछ भी हुआ वह पहले से नियत था। इसका समय नीयत था और इसी प्रकार घटित होना था। अब समय आ गया है कि पूरे विश्व को विश्वव्यापी सूझ-बूझ अपनानी होगी। मैं हैरान थी कि उस कठिन समय में मानव सत्य को पाने के लिए कितना लालायित था क्योंकि सर्वत्र फैले असत्य के बीच सत्य को चला पाना बहुत कठिन होता है। सत्य की बात जब आप करते हैं तो जिस प्रकार लोग आपके पीछे पड़ जाते हैं उनका मुकाबला करना बहुत कठिन कार्य है क्योंकि सदैव क्रूरता असत्य और आक्रामकता की प्रवृत्ति वाले लोगों से मुकाबला करना आसान नहीं। ये सब आत्म घातक तत्व हैं। इसके अतिरिक्त भी हमारे अन्दर बहुत से आत्मघातक दुर्गुण हैं जैसे मद्यपान, धूम्रपान और नशा सेवन की आदतें। परन्तु लोग ये सब करते हैं। ये नहीं कि उन्हें इनसे होने वाली हानियों का ज्ञान नहीं है फिर भी समय के प्रभाव के कारण वे ये सब करते हैं। यही कलियुग है, इसमें हम स्वयं को नष्ट करते हैं तथा अन्य लोगों को नष्ट करने का प्रयास करते हैं। ऐसा करने के लिए हमारे मन में एक अजीब किस्म का प्रलोभन है। केवल इतना ही नहीं, इस प्रकार के कार्य करने में हमें आनन्द आता है। जब हम कहते हैं कि कलियुग समाप्त हो गया है तो आवश्यक है कि कलियुग के विषय में हमें कुछ ज्ञान तो होना ही चाहिए। कलि एक देवता थे जिन्हें कलियुग तथा कलियुग की सभी समस्याओं को विश्व में लाना था।

सर्वप्रथम यह भ्रान्ति की सृष्टि करता है। यह भ्रान्ति उत्पन्न करता है। लोग ये नहीं समझ पाते कि सच्चा व्यक्ति कौन है, झूठा कौन है? यही कारण है कि आजकल बहुत से झूठे लोग हैं और बहुत से झूठा प्रचार करने वाले। बहुत से लोग बड़ी-बड़ी बातें बनाते हैं परन्तु उनके पास कुछ भी नहीं है। यह भी एक प्रकार की भ्रान्ति है जिसका सृजन कलियुग करता है। एक बार ऐसा हुआ कि परस्पर अत्यन्त प्रेम पूर्वक रहने वाले पति-पत्नी नल और दमयन्ति कलि के कारण बिछुड़ गए थे। कलि इस प्रकार के कार्यों में ही लगा रहता था-लोगों के मस्तिष्क में समस्याएं उत्पन्न करना, परिवारों को अशान्त करना, राष्ट्रों की शान्ति भंग करना और मानव के अन्दर की सारी शुभ इच्छाओं और भावनाओं में विघ्न डालना। एक बार कलि नल के हाथ पड़ गया। नल ने कहा कि क्यों न मैं तुम्हारा वध कर दूँ। तुम अत्यन्त भयानक व्यक्ति हो। लोगों के लिए भ्रान्ति और समस्याएं खड़ी करते हो, तुम्हारा वध तो हो ही जाना चाहिए। कलि ने उत्तर दिया कि यदि तुम मेरा वध करना चाहते हो तो कर लो परन्तु इससे पहले मेरे महात्मय को सुन लो। तुम्हारा क्या महात्मय है और क्या महत्व है? वह कहने लगा कि मेरा महात्मय ये है कि जब मैं इस पृथ्वी पर आऊंगा, जब मैं इस पृथ्वी पर राज्य करूंगा तो, मैं जानता हूँ कि यहाँ भ्रान्ति होगी, अव्यवस्था होगी, इतनी समस्याएं

होंगी, कि लोग इनसे तंग आकर सत्य की खोज में निकल पड़ेंगे। जो लोग सत्य की खोज में आज पहाड़ों और वादियों में भटक रहे हैं वही लोग सर्वसाधारण मनुष्यों और गृहस्थों के रूप में यहां होंगे और निश्चित रूप से वे सत्य को पा लेंगे। स्वयं कलि ने इस बात की भविष्यवाणी की थी। तो जैसा आप देख रहे हैं अत्यधिक अव्यवस्था है, अनगिनत समस्याएं हैं। लोगों को जब आप देखते हैं तो समझ नहीं पाते कि इतने पढ़े-लिखे, बुद्धिमान अधिकारी वर्ग के लोगों के भी इतने गलत विचार हो सकते हैं और इतनी गलत चीजों के पीछे भी वे दौड़ सकते हैं। समस्या का कारण यही कलियुग है। यही हमारे जीवन में ऐसी विशद् स्थितियाँ पैदा करता है। सर्वप्रथम यह ऐसी स्थिति पैदा करता है कि व्यक्ति सोचने लगता है कि वह बहुत असुरक्षित है और उसे स्वयं को सुरक्षित करने के लिए कुछ करना चाहिए। वह ऐसे स्थान पर चला जाता है जहाँ उसका नाश होना होता है। वह जान भी नहीं पाता कि उसका नाश होने वाला है। मनुष्यों में दूसरा दोष भयंकर ईर्ष्या की भावना है। ईर्ष्या की इस भावना को कलियुग बहुत बढ़ा देता है। सभी चीजों के प्रति हम ईर्ष्यालु हो उठते हैं। इस भावना से हमारी हीन भावना (Inferriority Complex) प्रकट होती है। परन्तु ईर्ष्या की इस भावना के कारण हम बिना किसी उचित कारण के अन्य लोगों से घृणा करने लगते हैं। चोटी के राजनीतिज्ञ बिना दूसरे व्यक्ति की उपलब्धियों को समझे उनसे घृणा करने लगते हैं। उसने ये उपलब्धियाँ कैसे प्राप्त कर ली हैं? क्यों न मैं उससे ईर्ष्या करूं? इसके अतिरिक्त हममें एक अन्य दोष है, जो सबसे बुरा है। जैसा श्री कृष्ण ने कहा यह क्रोध है। क्रोधी प्रवृत्ति के मनुष्य सत्य को नहीं देख सकते क्योंकि जरा सा भड़काने पर ही वे क्रोधित होकर दूसरों से मारपीट करने लगते हैं या उनसे गाली-गुफ्तार करने लगते हैं। हर **सहजयोगी का यह एक अन्य मापदण्ड है कि वह कहाँ तक क्रोध के इस दोष से मुक्त हो पाया। क्रोध आने का अभिप्राय ये है कि आपके अन्दर अशान्ति है और दूसरे व्यक्ति पर अनावश्यक आक्रमण करने के लिए आप क्रोधित होते हैं। मौन रहकर भी आप बहुत प्रभावशाली हो सकते हैं।** चीन में लोगों की एक कहानी है। चीन में कुछ लोगों में लड़ाई चल रही थी, तो उन्होंने सोचा कि इसका निर्णय करने के लिए क्यों न हम अपनी जगह मुर्गे लड़ा लें। तो उन्होंने मुर्गा का दंगल किया। एक व्यक्ति अपना मुर्गा एक जैन सन्त के पास ले गया। वहाँ जाकर उसने पूछा कि इस मुर्गे के साथ मैं क्या करूं जिससे यह दूसरे मुर्गे को पछाड़ दे। महात्मा ने कहा कि यह बहुत सरल है, तुम उसे बिल्कुल शान्त रहने का प्रशिक्षण दो। वह व्यक्ति कहने लगा कि मैं ऐसा न कर पाऊंगा। महात्मा ने कहा, ठीक है मुर्गा मेरे पास छोड़ दो। महात्मा ने मुर्गे को सिखाया कि किस प्रकार हर स्थिति में, चाहे कोई आक्रमण कर रहा हो तो भी, शान्त रहना है। जब उस मुर्गे को अखाड़े में उतारा गया तो वहाँ बहुत से मुर्गे उस पर आक्रमण करने लगे। परन्तु साक्षी भाव से वह उनको शान्तिपूर्वक देखता रहा। उसकी इस शान्ति से सारी समस्या का समाधान हो गया क्योंकि अन्य सभी मुर्गे उससे घबरा कर दौड़ गए। उन्होंने सोचा कि यह इतना शक्तिशाली है कि हिलता भी नहीं! तो आक्रमण और प्रतिक्रिया न करने का गुण उसने प्राप्त कर लिया था। **वास्तव में प्रतिक्रिया मानव की बहुत बड़ी दुश्मन है। हम सभी चीजों के प्रति प्रतिक्रिया**

करते हैं। हमें प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए। जब हम शान्त हो जाएंगे तब ये शक्ति, जिसके विषय में मैं आपको बता रही हूँ, परम चैतन्य की यह शक्ति कार्य करती है। यदि आप प्रतिक्रिया करते हैं, तो ठीक है। ये कहती है कि करो प्रतिक्रिया परन्तु यदि आप सभी कुछ इस पर छोड़कर मौन और शान्त हो जाते हैं तो यह गतिशील हो उठती है। इतनी भली-भान्ति यह कार्य कर सकती है, आप यहाँ बैठे हों या अन्यत्र, यह कार्य कर सकती है। यह इतनी प्रबल शक्ति है, इतनी प्रभावशाली शक्ति है इसमें महान ज्ञान तथा सूझ बूझ है और सर्वोपरि यह आपसे प्रेम करती है। तो जब ये शक्ति अस्तित्व धारण करती है, वैसे तो एक प्रकार से यह सदैव अस्तित्व में होती है, परन्तु कृत युग में जब ये प्रभावशाली होती है, तो आप हैरान होंगे, कि इसके माध्यम से क्या कुछ घटित होता है। हर व्यक्ति मुझे बताता है कि "श्रीमाताजी यह चमत्कार हो गया, वह चमत्कार हो गया। मैं जानती हूँ यह चमत्कार नहीं है, यह परम चैतन्य सभी कार्य, सभी सुन्दर चीजें कर रहा है। यही आपकी सहायता करने का और अपने प्रेम को प्रदर्शित करने का प्रयास कर रहा है। जो चीजें हम देख नहीं सकते, जिनके विषय में मस्तिष्क से सोच नहीं सकते, जो मस्तिष्क से परे हैं उन्हें भी ये करता है। मैं हैरान थी कि रूस में मुझे विशेष रूप से वैज्ञानिकों का सामना करना पड़ा। वैज्ञानिक ज्ञान से भरपूर थे, बहुत गहन थे और चीजों को बहुत अच्छी तरह से समझते थे। विद्या के इस महान प्रतिष्ठान, प्राचीनतम विश्व विद्यालयों में से एक सेन्ट पीटर्स बर्ग विश्वविद्यालय में, मेरी समझ में नहीं आता, किसलिए मुझे सर्वोच्चतम उपाधि दी गई! किसलिए? मैं नहीं जानती, परन्तु उन्होंने कहा कि आप विज्ञान से कहीं उच्च हैं। सहजयोग को उन्होंने संज्ञानात्मक विज्ञान कहा, उन्होंने उसे 'संज्ञानात्मक विज्ञान' का नाम दिया। श्रीमाताजी आपका पूरा ज्ञान संज्ञानात्मक विज्ञान है। बात केवल इतनी है कि मैं यदि आपसे कोई चीज बताऊं तो आप इसे प्रमाणित कर सकें, वैज्ञानिक इसे सत्यापित कर सकते हैं, हर व्यक्ति पता लगा सकता है कि यह ऐसे है या नहीं। परन्तु इन झूठ-मूठ के गुरुओं की यदि आप इसी प्रकार परीक्षा लें तो आप जान जाएंगे कि उनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। उनके पास बताने के लिए कोई कारण नहीं है कि ऐसा क्यों घटित हो रहा है। विश्व भर में मुझे वैज्ञानिकों का सामना करना पड़ा और मैं हैरान थी कि उन्होंने मुझे मान्यता दी, कहने लगे, श्री माताजी यह संज्ञानात्मक विज्ञान है और सभी जगह उन्होंने मुझे उपाधियाँ तथा अन्य सम्मान दिए। मैं तो जानती भी नहीं थी कि संज्ञानात्मक विज्ञान क्या होता है। परन्तु यह वह ज्ञान है जो आप मस्तिष्क से ऊपर उठकर प्राप्त करते हैं। आपका मस्तिष्क हो सकता है कि पूर्वाग्रहों से पूर्ण हो, या ईर्ष्या और क्रोध से भरा हुआ हो। परन्तु मस्तिष्क से ऊपर उठकर जब आप ज्ञान प्राप्त करते हैं तो यह पूर्ण ज्ञान होता है। कोई भी उसे चुनौती नहीं दे सकता। यह 'पूर्ण ज्ञान' है। मैं आपको एक उदाहरण दूँगी। वैज्ञानिकों से मैंने कहा कि पहला चक्र-मूलाधार कार्बन के अणुओं से बना है। कार्बन के अणुओं से मूलाधार चक्र आपको एक विशेष प्रकार की संरचना प्रदान करता है। **कार्बन का यदि आप एक मॉडल बना लें और इसका फोटो ले सकें तो आप देखेंगे कि इस मॉडल को जब आप दाएं से बाएं को देखेंगे तो यह स्वास्तिक सम प्रतीत होगा। उन्हें दिखाने के लिए मैंने कार्बन का**

एक मॉडल बनाया । इसे जब आप बाएं से दाएं को देखेंगे तो इस पर ॐ लिखा हुआ दिखाई देगा, नीचे से ऊपर को जब आप इसे देखेंगे तो क्रूस दिखाई देगा जिसका अर्थ ये हुआ कि मूलाधार के श्री गणेश ईसा रूप में अवतरित हुए। अत: वैज्ञानिकों ने एक मॉडल बनाया उसके फोटो लिए और खोज निकाला कि मेरी कही हुई बात सत्य है। ये मॉडल दिखाया भी जा सकता है। तो जो भी कुछ आप जानते हैं, जो भी कुछ आप कहते है वह वैज्ञानिकों द्वारा भी सत्यापित होना चाहिए। मैं विज्ञान को छोड़ नहीं रही, विज्ञान निर्नैतिक (न नैतिक न अनैतिक) है। जो भी कुछ आप कहें, सहजयोग में आने के पश्चात् वैज्ञानिक परिवर्तित हो जाते हैं। अन्य देशों के वैज्ञानिक, अपने देश का तो मैं नहीं जानती, ऐसी अवस्था तक पहुँच गए हैं कि वे जानना चाहते हैं कि विज्ञान से परे क्या है। सभी लोग भारत आते हैं, क्यों? वे जापान क्यों नहीं जाते? चीन क्यों नहीं जाते? अमेरिका क्यों नहीं जाते? सत्य को खोजने के लिए वे भारत आते हैं। क्योंकि भारत में यह संज्ञानात्मक विज्ञान बहुत प्राचीन है। परन्तु हम इसके विषय में नहीं जानते। स्वतन्त्रता के पश्चात् अचानक भारतीय लोग पाश्चात्य रंग में रंग गए हैं। गाँधी जी के तथा अन्य भारतीय विचारों को ताक पर रख दिया गया है। हम सब जानते हैं कि हमारे देश में क्या चीज इतनी महान थी, इतनी महान संपदा, इतनी महान शक्ति इस देश में विद्यमान थी। हमारे सन्त ऐसी ऐसी चीजों को जानते थे जिनका विज्ञान को कोई ज्ञान नहीं। उन लोगों की कही हुई बातों को सत्यापित करना वैज्ञानिकों का काम है। मैंने देखा है ये अत्यन्त साधारण कार्य है। आप यदि वास्तव में सत्य के विषय को जानते हैं और इसके विषय में वैज्ञानिकों को बताते हैं तो वैज्ञानिक इसके पीछे पड़ जाएगा और इसके तथ्य के सत्य को खोज निकालेगा। ऐसा केवल एक उदाहरण नहीं है, मैं ऐसे सैंकड़ों उदाहरण दे सकती हूँ। जब मैंने उन्हें कुछ बताया और वैज्ञानिक विधियों से उसे सत्यापित करने के लिए कहा तो उन्होंने ऐसा कर दिखाया। सत्यापित करने की बहुत सी वैज्ञानिक विधियाँ उन्होंने खोज निकाली। परन्तु वे जानते ही नहीं कि उन्हें क्या खोजना है। कभी इस चीज और कभी उस चीज के पीछे दौड़ फिर रहे हैं। कभी चाँद पर जा रहे हैं, कभी कहीं और ये कोई तरीका नहीं है। पहले निश्चित कर लें कि आपने क्या खोजना है और फिर देखें कि यह है या नहीं। पश्चिम को यद्यपि हम एक प्रकार से उन्नत कहते हैं। परन्तु, मैं हैरान थी, आध्यात्मिकता के मामले में ये कहीं भी नहीं हैं। हमारे मुकाबले में उनमें संज्ञानात्मक विज्ञान का गुण बहुत कम है। परन्तु यह ज्ञान हममें भी तो शून्य हो गया है क्योंकि हम लोग पाश्चात्य रंग में रंग गए हैं। हमारे सभी विचार पश्चिमी हैं और सारा ज्ञान हम बाहर से लेते हैं, उन लोगों से जो भारतीय संस्कृति के विषय में खोज करना चाहते हैं। वे इतने तुच्छ हैं और इतने अयोग्य कि इसके विषय में वे कुछ नहीं बता सकते। इसे रूढ़िवादी विचारों से कुछ नहीं लेना देना, ऐसा कुछ भी नहीं है, परन्तु यह वास्तविकता है और सत्य है, इस सत्य को वे स्वयं नहीं जानते। भारतीय संस्कृति की मुनादी वे करना चाहते हैं परन्तु उनमें ऐसा कुछ भी नहीं है, क्योंकि जब तक आप आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं और उस अवस्था तक नहीं पहुँच गए तब तक परम चैतन्य के रहस्यों को आप नहीं जान सकते। अत: सभी भारतीय लोगों के लिए आवश्यक है कि सहजयोग को अपनाएं, पूरे विश्व के लोगों

के लिए भी आवश्यक है कि सहजयोग को अपनाएं। मैंने आपको रूस के विषय में बताया, वहाँ स्थिति बहुत खराब है। फिर भी, मैं कहूँगी कि, वहाँ सहजयोगी बहुत प्रसन्न है। एक बार जब मैं वहाँ थी तो वहाँ क्रान्ति हो गई। सभी लोग बहुत चिन्तित थे, बहुत से टैंक वहाँ से गुजर रहे थे। मैंने रूस के सहजयोगियों, जो संख्या में एक लाख से भी ऊपर हैं, से पूछा कि देश की घटनाओं पर क्या वे चिन्तित नहीं हैं? उन्होंने उत्तर दिया, श्री माताजी हम बिल्कुल चिन्तित नहीं हैं। मैंने पूछा, "क्यों?" "क्योंकि हम परमात्मा के साम्राज्य में हैं। हम रूस की चिन्ता क्यों करें?" स्वभाव परिवर्तित हो जाते हैं और व्यक्ति झूठ नहीं बोलता, वास्तव में ऐसा महसूस करता है। इस प्रकार वह इन धर्म, जाति, राष्ट्र आदि के सभी मूर्खतापूर्ण विचारों से मुक्त हो जाता है। यह मानव को मानव से भिन्न कर देता है परन्तु बनावटी रूप से भी आप एक नहीं हो सकते। बहुत से लोग कहते हैं, नहीं नहीं, हमें ये सब अलग-अलग चीजें नहीं लेनी चाहिए। हमें एक ही चीज़ लेनी चाहिए। आप ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि स्वभाव से मनुष्य को ऐसा नहीं बनाया गया है। हमने इटली में दूसरे धर्मों के लोगों से बातचीत की और उन्होंने मुझे बताया हमें एक धर्म नहीं चाहिए, पूरे विश्व के लिए एक ही धर्म हमें नहीं चाहिए।" मैंने कहा,"क्यों?" क्योंकि आप एक दूसरे से लड़ना चाहते हो इसलिए? आप एक ही धर्म क्यों नहीं चाहते। एक मात्र धर्म ये है कि आप मानव है, बहुत अच्छे मनुष्य हैं तथा आप परमात्मा से एकाकारिता प्राप्त कर सकते हैं। यही आपका धर्म है जिसका वचन दिया गया था और इसी को कार्यान्वित होना है। परन्तु वे स्वीकार नहीं करते। अब हम परिवर्तित हो रहे हैं। वे भी स्वयं को इतनी तेजी से परिवर्तित कर रहे हैं, कि मैं हैरान हूँ। टर्की जैसे देश में भी दो हजार सहजयोगी हैं। ये अन्य लोगों को भी सहजयोगी बना रहे हैं। तो पादरियों, मुल्लाओं, पण्डितों आदि द्वारा बनाए गए इन मूर्खतापूर्ण विचारों का पतन हो रहा है; और उभर करके आ रहा है। भारत में भी बहुत से पण्डित और शास्त्री आदि हैं। मैं कहूँगी कि वे कुछ नहीं जानते क्योंकि जब तक वे परम चैतन्य को महसूस नहीं कर लेते तब तक उनकी बताई हुई बातें निराधार हैं। तो लड़ाई-झगड़े, आक्रामकता, दिखावा आदि द्वारा उत्पन्न समस्याएं सहजयोग से ठीक हो सकती है। क्योंकि आपका चित्त मस्तिष्क से ऊपर जाता है, आप मस्तिष्क से ऊपर जाते हैं, आज्ञा चक्र खुल जाता है और आप मस्तिष्क से ऊपर जाकर इस परमेश्वरी शक्ति से एक हो सकते हैं। एकाकारिता होने के पश्चात् आपको समझ में आता है कि किस प्रकार छोटी-छोटी चीजों में यह परमेश्वरी शक्ति आपके लिए कार्य करती है। आप सब सहजयोगी हैं और अनुभवी हैं ये सब बताने की मुझे कोई आवश्यकता नहीं। **परन्तु सभी लोगों के पास अनगिनत उदाहरण हैं जिनके द्वारा वे जानते हैं कि परम चैतन्य ने ही यह कार्य किया है।** अत: सत्य साधक, जो वास्तव में सच्चा है, के लिए आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना सबसे पहला कार्य है। चाहे आप बाइबल पढ़े, कुरान पढ़े, या कुछ और पूरे विश्व में यही (आत्मसाक्षात्कार) आध्यात्मिकता का सार है। किसी ने इन शास्त्रों को गहनता से पढ़ा भी नहीं फिर भी वे लज्जाजनक बातें कहते हैं। ये सब इन ग्रन्थों में लिखा हुआ नहीं है। फिर भी लोग इनके लिए लड़ रहे हैं। उनकी इन हरकतों ने हमें यह दर्शाने में सहायता की है कि सभी धर्मों का सार एक ही है और एक दिन

सभी लोग आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करेंगे। एक बार जब वे आत्मसाक्षात्कार को अपना लेंगे तब वे उन्नत होंगे और जब वे इसकी गहनता में उतर जाएंगे तो सब कुछ देख सकेंगे। यहाँ बैठे हुए आप सब सहजयोगी यह सब जानते हैं। आप जानते हैं कि आपको क्या लाभ हुआ है और क्या उपलब्धियाँ आपने प्राप्त की हैं? अत: इस सबका श्रेय मुझे देना, मेरे विचार में, सत्य नहीं है। हमारे देश में बड़े-बड़े महान सन्त हुए हैं, सभी देशों में सन्त हुए हैं। बहुत से देशों में सूफी सन्त हुए उन सबने कहा कि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लो, 'स्वयं को पहचानों' (Know Thyselves) सभी ने एक ही बात कही है, स्वयं को पहचानों परन्तु कोई भी ऐसा नहीं कर रहा है। ये एक अलग बात है, परन्तु वास्तव में जो आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति थे, चाहे वे मुस्लिम धर्म के थे या हिन्दू या इसाई या किसी अन्य धर्म के, वे किसी भी देश के हो, सबने एक ही बात कही क्योंकि सत्य एक ही है। सबने एक ही बात कही कि सर्वप्रथम स्वयं को पहचान लो और तब आप सत्य को जान जाएंगे। अत: हमारे जीवन का सार यही है कि हमें स्वयं को पहचानना है। एक बार जब हम स्वयं को पहचान लेंगे तो हर चीज से ऊपर उठ जाएंगे, क्योंकि तब आप उस बूँद जैसे हो जाते हैं जो समुद्र में मिलकर विलीन हो जाती है। किस प्रकार यह लुप्त हो जाती है! एक ही चीज घटित होगी और एक बार जब ये घटित हो जाएगी तो आप हैरान होंगे, कि आप की सबसे एकाकारिता हो गई है। दूसरा कौन है? सभी में आप स्वयं को ही देखते हैं। सहजयोग में हम देखते हैं कि बहुत से लोग ये कहते हैं कि यह बहुत बड़ा करिश्मा है, बहुत बड़ा चमत्कार है। ऐसा कुछ नहीं है। आपकी अपनी कुण्डलिनी है और आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने की शक्ति भी आपकी अपनी है। यह कलियुग का आशीर्वाद है। कलियुग में यह घटित होना था और ये हो रहा है, यही कारण है कि हजारों लोग आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर रहे हैं। प्राचीनकाल में एक गुरु से कोई एक शिष्य ही आत्मसाक्षात्कार ले पाता था। वे गुरु भी बहुत कठोर होते थे और किसी ऐरे-गैरे को आत्मसाक्षात्कार नहीं देते थे। आत्मसाक्षात्कार देने से पूर्व वे अपने शिष्यों को कड़ाई से जाँचते परखते थे। परन्तु सहजयोग में हम ऐसा नहीं करते, हम तो लोगों को एक बार सहजयोग में ले आते हैं, बस। मैं हैरान हूँ कि किस प्रकार बुद्धिजीवी लोग इसके विषय में बिना कुछ जाने, इसकी गलतियाँ ढूँढने की कोशिश करते हैं! उन्हें पहले आत्मसाक्षात्कारी बनना होगा, उसके पश्चात् वे जो भी कुछ करेंगे वह पूरे समाज के लिए निश्चित रूप से रचनात्मक, सहायक, शान्ति एवं तारतम्यता प्रदायक होगा। परन्तु आपको आत्मसाक्षात्कारी होना होगा, बिना प्राप्त किए किसी अन्य को आप क्या दे पाएंगे। मैं देखती रही हूँ किस प्रकार सहजयोग एक व्यक्ति से आरम्भ होकर इतने अधिक लोगों तक और इतने अधिक देशों तक पहुँचा है। यह सब यह दर्शाता है कि पूरे विश्व के लिए परिवर्तित होने का समय आ गया है और ये परिवर्तन महत्वपूर्णतम है। यही हमारा लक्ष्य होना चाहिए। हर चीज को भूल जाओ राजनीति, अर्थशास्त्र, ये वो सभी कुछ भूलकर परिवर्तन प्राप्त कर लो। एक बार जब आप परिवर्तित हो जाएंगे तो जान जाएंगे कि ठीक कार्य कैसे करने हैं, ऐसे कार्य जो समाज के लिए हितकर हों। यह सब आप अपने जीवन में देख चुके हैं और जो भी कुछ घटित हुआ यह केवल मेरे प्रयत्नों से ही नहीं हुआ, इसको करने में बहुत से लोग मेरे साथ थे।

मेरा योगदान केवल इतना है कि मैंने एक विधि खोज निकाली जिसके माध्यम से सामूहिक आत्मसाक्षात्कार दिया जा सकता है। बहुत से लोग सामूहिक रूप में इसे प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि किसी भी अन्वेषण - उदाहरणार्थ विद्युत का लाभ यदि सभी लोग न उठा पाएं तो ये बेकार है। अपने पूरे जीवन में मैं केवल इतना ही कर पाई कि सामूहिक आत्मसाक्षात्कार दिया जा सकता है और यह कार्य बहुत अच्छी तरह से हुआ। यह अत्यन्त साधारण है, एक व्यक्ति को जब आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो जाता है तो वह अन्य लोगों को भी आत्मसाक्षात्कार दे सकता है। पहले ये लोग मुझे बता रहे थे कि हम 70 देशों में कार्य कर रहे हैं, अब ये कह रहे हैं कि हम 80 देशों में कार्य कर रहे हैं। मैंने पूछा, कैसे? कोई व्यक्ति किसी देश में गया और वहाँ सहजयोग फैलाया, दूसरा किसी अन्य देश में गया तो वहाँ सहजयोग फैलाया। तो कल्पना करें कि यह कितना सरल हो गया है! मेरे लिए ये कितना सरल है! इस उम्र में मैं 70, 80 देशों में नहीं जा सकती परन्तु सहजयोग वहाँ पहुँच गया है। इसने परमात्मा का आशीर्वाद प्रदान किया है।

तो आप लोग यहाँ क्यों आए हैं? आपको जानना चाहिए कि यहाँ पर निजामुद्दीन औलिया थे। यहाँ निजामुद्दीन थे और दमदमा साहिब भी यहाँ हुए। ये सब महान सन्त थे। जिन्होंने प्रेम एवं सूझ-बूझ की बातें कीं। परन्तु बातें तो बातें ही है क्योंकि इन बातों को सुनने वालों में तो सूझ-बूझ का अभाव है। तो हम लोग उनके आशीर्वाद, उनकी महानता के तभी अधिकारी हो सकते हैं। जब हम सहजयोगी हों और आत्मसाक्षात्कारी हों। मैं अपने पूर्ण हृदय और आत्मा से आशीर्वाद देती हूँ। मैं इसे जिस प्रकार कार्यान्वित करने का प्रयत्न कर रही थी यह वैसे ही हो रहा है। अमरीका में सहजयोग बहुत तेजी से फैल रहा है। नहीं तो सभी कुगुरु अमरीका पहुँचे परन्तु अब अचानक महान घटनाएं घटित हो रही हैं। उनके सन्तुष्टि के लिए मैंने उनसे कहा कि मैं अमरीका आकर कम से कम दो महीने रहूँगी। कहीं ठहरना, इतना महत्वपूर्ण नहीं है। महत्वपूर्ण बात तो लोगों का समझना है। साधकों को चाहिए कि वे विनम्र हो जाएं और इस बात को समझें कि हमें सत्य का ज्ञान प्राप्त करना है। एक बार जब ये विनम्रता आ जाएगी तो यह कार्य करेगी, चाहे व्यक्ति किसी भी जाति, धर्म और प्रजाति से सम्बन्धित हो यह कार्य करेगी।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें, यह मेरा हार्दिक आशीर्वाद है। इस अभिनन्दन के लिए आप सबका बहुत-बहुत धन्यवाद।

परमपूज्य माताजी श्री निर्मला देवी द्वारा वन्दे मातरम् का वर्णन

आज की संध्या का यह अंतिम गीत है। वास्तव में यह पुराने दिनों का अत्यन्त महान गीत है। पिछली बार मैंने अपने पिता की एक कहानी सुनाई थी। वे महान् देशभक्त थे। तिरंगा झण्डा उठाकर वे उच्च न्यायालय पर जा चढ़े। अंग्रेज सिपाहियों ने उन पर गोली चलाई जो उनके सिर पर लगी। सिर से खून बहने लगा, फिर भी वे रुके नहीं। झण्डा लेकर वे न्यायालय के शिखर पर जा पहुँचे और वहाँ झण्डा फहरा दिया। केवल तभी वे नीचे आए और हमें यह गीत गाने को कहा. नीचे खड़े हुए हम सभी लोग उनकी इस बहादुरी पर नाच रहे थे। उन्होंने कहा, तुम सब 'वन्दे मातरम्' गाओ अर्थात् हे माँ हम आपको नमन करते हैं और आज हमारे देश में कुछ लोग ऐसे खड़े हो गए हैं जो ये कहते है कि यह गीत नहीं गाना चाहिए। यह गीत गाते हुए हमने पूरा स्वतंत्रता संग्राम किया और जो लोग इस गीत का विरोध कर रहे हैं उनसे मैं पूछती हूँ कि आपमें से कितने लोगों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए कार्य किया? स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए आपका क्या योगदान है। आपको ये कहने का क्या अधिकार है कि यह गीत नहीं गाना चाहिए?

यह गीत हमारी मातृभूमि के सौन्दर्य और उसकी प्रकृति का वर्णन करता है। इसे सदा राष्ट्र गीत के रूप में गाया गया। परन्तु अब कुछ नए लोग उठ खड़े हुए हैं जो ये कहते हैं कि यह संस्कृत भाषा में है। इस गीत की पूरी भाषा संस्कृत नहीं है। इन चीजों को देखते हुए तो कई बार फूट-फूट कर रोने को दिल करता है। मुझे वो दिन याद है जब बर्तानवी बन्दूकें हमारे पर तनी हुई होती थी और हम यह गीत गाते हुए बहादुरी से उनका सामना करते थे। आज ये लोग, न जाने कहाँ से उठ खड़े हुए हैं, और ये कहने का प्रयत्न कर रहे हैं कि हमें ये गीत नहीं गाना चाहिए। कलियुग में यही होता है। पिछली घटनाओं को लोग भूल जाते हैं। मुझे आशा है कि आप सब लोग इस राष्ट्र गीत को गाने के लिए खड़े हो जाएंगे।

धन्यवाद

♦ ♦ ♦

देशभक्ति

हम सब हिन्दुस्तानी हैं और इस भारतवर्ष में रहते हैं। इसी के अन्न, जल से हम पले हुए हैं और इसी के सहारे हम जी रहे हैं। आगे भी इसी के सहारे जीना है। हमारे बच्चों के लिए, जो आने वाली पीढ़ी है उसके लिए, यही संदेश होना चाहिए कि अपनी भारत माता से प्यार करो, अपने देश के प्रति बहुत अधिक अपनापन होना चाहिए। हमने देखा है परदेस में, आश्चर्य की बात है कि एक-एक देश में हर एक आदमी अपने देश के बारे में जानता है और अपने देश के प्रति बड़ा अभिमान रखता है। उनसे पूछने पर कि भई आपके देश में तो इतनी गरीबी है तो भी क्या हुआ? ये हमारा जो देश है इसी ने हमें जन्म दिया, हम तो ये हमारा देश जो है ये हमारे लिए महान चीज़ है। इसी प्रकार हर हिन्दुस्तानी, भारतीय को सोचना चाहिए कि ये भारतवर्ष जो है या भारत जिसे कहते हैं, जो हिन्दुस्तान है, ये हमारा देश है और इसके लिए हमें देशभक्ति रखनी चाहिए। जैसे ही आपके अन्दर देश भक्ति आ जाएगी, आपको आश्चर्य होगा, अनेक गुण आपके अन्दर आ जाएंगे, अनेक गुण। सबसे बड़ा गुण तो ये आएगा कि आपके अन्दर जो बेकार की महत्वाकांक्षाएं हैं और जो आपके अन्दर बेकार की इच्छाएं हैं, सब खत्म हो जाएंगी। लगेगा कि इस देश की उन्नति हो तो हमारी भी उन्नति हो जाएगी। हमने तो अपने जीवन में बहुत ऐसे लोग देखे। हमारा समय और था। हम बड़े भाग्यशाली है कि ऐसे ऐसे महान त्याग मूर्ति लोग हमने देखे और उनको देखकर के हमने जाना कि इस देश का स्वातन्त्र्य उन्होंने कमाया। स्वतंत्रता कमाने के बाद जो हाल हुआ वो आपको सबको मालूम है! अब आपका कर्त्तव्य है, जब आप सहजयोग में आ गए हैं, कि पहले अपने भारतवर्ष में क्या खराबी है, क्या बुराइयाँ हैं, उसको हटाना चाहिए और इसके प्रति नितान्त श्रद्धा रखनी चाहिए। तभी आपका देश दुरूस्त हो सकता है, नहीं तो आजकल जैसे लोग आए हैं, आप सब जानते हैं, मुझे बताने की जरूरत नहीं है। सिर्फ ये है कि हमें वैसा नहीं होना है। हमें अपने देशवासियों के लिए और हमारे देश के लिए सब कुछ करना चाहिए, जो हम कर सकते हैं। आप सबको अनन्त आशीर्वाद है, कल फिर से प्रोग्राम होगा। आप जरूर आइए। अपने मित्रों को भी साथ लाइए। सबके लिए यहाँ निमन्त्रण है। अनन्त आशीर्वाद।

⌘ ⌘ ⌘

गुडी पड़वा पूजा

नोएडा निवास 18.3.99
परम पूज्य माताजी
श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज का दिन गुडी पड़वा का है और ये महाराष्ट्र में मनाया जाता है ज्यादा। कहते हैं कि ये बड़ा शुभ दिन है, इस दिन जो भी कार्य करो वो बहुत सफल हो जाता है। वो जो भी हो, सांसारिक दृष्टि से बात है और दूसरा ये कि शालीवाहन में जो एक ब्रह्म वाहन करके थे, उन्होंने विक्रमादित्य को हराया और उसके बाद उन्होंने ये नया पंचाग शुरू किया जिसे शालीवाहन कहते हैं। उसके वर्ष का आज का दिन प्रथम दिन है। तो इसका महात्मय ज्यादा महाराष्ट्र में है कि उन्होंने ये शालीवाहन का ये द्योतक दिखाने के लिए एक कुम्भ को लेते हैं और उसके अन्दर एक शाल जो कि शालीवाहन थे, तो कुम्भ कुण्डलिनी का द्योतक है। तो एक शाल टाँग देते हैं ऊपर से एक कुम्भ रख देते हैं। उसका मतलब ये है कि कुम्भ जो है आध्यात्म का भी द्योतक है, कि आध्यात्म अपने कुंभ में है। और शालीवाहन इसलिए के वो लोग पहले अपने को सात वाहन कहते थे। उनका कुण्डलिनी पर बड़ा विश्वास था, बाद में उन्होंने देवी को शाल देना शुरू कर दिया। बड़े देवी के भक्त थे। तो उन्होंने अपना नाम शालीवाहन कर लिया । इस तरह से वो नाम बदल गया और उन्होंने शालीवाहन अब जो थे वो मेवाड़ के वंशज थे। मेवाड़ के राजा होते थे। एक सिसोदिया वंश है, उस सिसोदिया वंश के एक बेटे थे, पर किसी कारण से उनका कुछ अनबन हो गया उनके चाचा के साथ, इसलिए वो भाग करके महाराष्ट्र में चले गए। उसके बाद वो मद्रास भी चले गए। इस तरह से ये चीज़ है कि इनका इतिहास ऐसा है। शालीवाहन का और उसी वंश के हम भी हैं। बहुत हज़ारों वर्ष पहले थे तो वो गए थे महाराष्ट्र में और फिर वहाँ से उसी शालीवाहन के हम लोग वंशज हैं। इसलिए हम लोगों का नाम सालिवया-साल्वे-ऐसा कर दिया गया। तो जो शाल्व थे जिन्होंने युद्ध किया था, भीष्म के साथ, आपने सुना होगा शाल्व, भीष्म के साथ शाल्व, उन्होंने मदद की थी पांडवों की बाद में। भीष्म ने चारों तरफ उनके शर पंजर डाले और उस शरपंजर की वजह से वे निकल नहीं पाए तो उन्होंने शाप दिया तुम्हारे भी ऐसे ही शरपंजर पड़ेंगे। वो आखिर में भीष्म के साथ हो गया। तो इस तरह से वो भी इसी वंश के हैं लेकिन हज़ारों वर्ष पहले के हैं। उसका (Revival) हुआ वो बहुत बाद में। एक वहाँ पर मुनि थे उनको सपने में दर्शन हुए शिवजी के और उन्होंने बताया कि बप्पारावल जो है उसको तुम यहाँ का राजा बना दो। तो फिर से Revival उसी शालीवाहन वंश का हुआ। पर पता नहीं उन्होंने कैसे शाल्व से शालीवाहन बना दिया? लेकिन उन्हीं के वंश में पद्मिनी हो गई और मेरठ के लोगों से हमारे लोग पता करने गए तो वे कहते हैं ऐसे तो बिल्कुल लोग थे, अपने प्रण के पूरे और ईमानदार और देवीभक्त और माने वो कहते हैं ऐसे लोग ही नहीं थे। तो एक अजीब अजीबोगरीब लोग थे। उनका सब नष्ट भ्रष्ट हो

गया क्योंकि उन्होंने Compromise नहीं किया। जयपुर वालों ने मुसलमानों से बाद में अंग्रेजों से Compromise कर लिया तो वहाँ बहुत समृद्धि थी। तो समृद्धि से किसी की Judgement नहीं होनी चाहिए Character से होनी चाहिए। तो ये आज का दिन जो है उन्हीं शालीवाहन लोगों ने बनाया, उसमें से जो बब्रुवाहन थे उन्हें क्राइस्ट से थोड़े पहले बनाया गया है विक्रमादित्य के जमाने में। सो अभी भी इसको महाराष्ट्र में लोग बहुत मानते हैं और इधर विक्रमी संवत है, महाराष्ट्र में शालीवाहन संवत है। हम लोग भी, क्योंकि मैं महाराष्ट्र की हूँ, शायद इसलिए हम लोग भी शालीवाहन से ही चलते हैं। उसके हिसाब से आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण है और जो कुछ आज आप इच्छा करेंगे वो पूर्ण हो जाएगी।

सबको अनन्त आशीर्वाद।

नवरात्रि पूजा-कबैला (27.9.98)

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आप कल्पना नहीं कर सकते कि एक माँ, जिसके इतने सारे सुन्दर बच्चे हों जो अपने परिवारों तथा बच्चों के साथ स्थापित हो चुके हों, उन्हें इतनी आनन्द की स्थिति में किस प्रकार देखती है! आप सबको इतने आनन्द में परमात्मा से एकलीन देखकर अत्यन्त सन्तोष हो रहा है। हमें एक बात महसूस करनी है कि यद्यपि आप लोगों की संख्या काफी है फिर भी विश्व की जनसंख्या के मुकाबले में सत्य को जानने वाले, जिन्हें वास्तविक सत्य का ज्ञान है, लोग बहुत कम हैं। नि:सन्देह आप ही लोग ज्ञानमय हैं। परन्तु जो ज्ञान सच्चा नहीं है या सत्य से प्रकाशित नहीं है, वह अर्थहीन है। बनावटी होने के कारण ऐसा ज्ञान उड़नछू हो जाता है। अपनी कुण्डलिनी जागृति द्वारा आप सबने वह अवस्था प्राप्त कर ली है जिसमें आप जान गए हैं कि वास्तविक ज्ञान क्या है? परन्तु उन लोगों के विषय में सोचें जो ये नहीं जानते कि ज्ञान क्या है।

उदाहरण के रूप में हम कहते हैं कि हमारा ज्ञान प्रेम के अतिरिक्त कुछ भी नहीं। परन्तु व्यक्ति को भेद समझना चाहिए। आपके अन्दर का प्रेम रूपी ज्ञान आपकी आत्मा से प्रसारित हो रहा है इसके लिए न तो आपको कोई बल देना पड़ता है, न कुछ सोचना पड़ता है, न कोई विशेष प्रकार के काव्य पढ़ने पड़ते हैं और न ही किसी रोमांचक स्थिति में जाना पड़ता है। बस शुद्ध प्रेम प्रसारित होता है और यही प्रेम ज्ञान भी है।

इसका वर्णन आप इस प्रकार कर सकते हैं, आपको अपने विषय में जो ज्ञान है वह प्रत्यक्ष है। इसकी अभिव्यक्ति, आपके तथा अन्य लोगों के बारे में भी आपकी अंगुलियों के सिरों पर होती है। आप अपने विषय में जानते हैं तथा अन्य लोगों के विषय में भी। यही महानतम सूक्ष्म ज्ञान आपके पास है। कोई अन्य इस प्रकार नहीं जानता। आपके अतिरिक्त कोई भी दूसरा मनुष्य अपने तथा दूसरों के विषय में नहीं जानता। तो यह ज्ञान जो आपको प्राप्त हुआ है अत्यन्त सूक्ष्म, अत्यन्त रहस्यमय और पूर्णत: गुप्त है। आप किसी व्यक्ति के विषय में यदि जानते हैं, तो जानते हैं। अन्य लोगों को ये पता नहीं होता कि आप उनके विषय में जानते हैं। **ये ज्ञान, जो आपने प्राप्त किया है प्रेम के अतिरिक्त कुछ भी नहीं।**

ज्ञान और प्रेम का एकीकरण करना अत्यन्त कठिन है क्योंकि ज्ञान के विषय में हमारा विचार उससे बिल्कुल भिन्न है जो हमने पुस्तकों में पढ़ा है। पुस्तकों में पढ़कर आप प्रेम कैसे कर सकते हैं? आम व्यक्ति के लिए प्रेम का अर्थ-लिप्सा है। अज्ञानता में आप लोगों, बच्चों, परिवार और वस्तुओं से लिप्त हो जाते हैं। लिप्सा अज्ञानता का प्रमाण है। ज्ञान यदि आपके पास है तो सभी लिप्साएं समाप्त हो जानी चाहिए और आप सार्वभौमिक (Global) व्यक्तित्व बन जाते हैं - सागर में एक बूँद।

उदाहरण के रूप में हम बहुत सी वस्तुओं

से चिपके हुए हैं जैसे हमारा परिवार। परिवार में यदि कुछ हो जाए तो हम परेशान हो उठते हैं। हम इसे सहन नहीं कर सकते। हमारे बच्चों को यदि कुछ हो जाए तो हमें लगता है मानो हम पर पहाड़ आ गिरा हो। परिवार से आगे जा कर आप अपने मित्रों, पड़ोसियों और अपने देश से भी लिप्त हो जाते हैं। अपने देश से लिप्त होना भी ज्ञान नहीं है। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् आप स्पष्ट देखने लगते हैं कि आपका देश क्या है, इसमें क्या कमी है, क्या अज्ञानता है? किस अन्धकार में यह खड़ा हुआ है और किस प्रकार अपने अधिकारों और चीजों के लिए लड़-झगड़ रहा है? परन्तु आत्मसाक्षात्कार द्वारा प्राप्त ज्ञान से आप स्पष्ट देखते हैं कि आपके देश की समस्या क्या है? तब अपने प्रेम के माध्यम से इस कमी को दूर करने का प्रयास करते हैं। अर्थात् इसका अभिप्राय ये हुआ कि प्रेम ही आपके ज्ञान की शक्ति है।

आपके अन्दर यदि पूर्ण ज्ञान है और फिर भी यदि आप घर में बैठकर आराम से ध्यान-धारणा कर रहे हैं तो यह अर्थहीन है। आपको बाहर जाकर लोगों से, अपने मित्रों से, परिवार के अन्य संबंधियों से मिलना होगा और उन्हें अपने ज्ञान के विषय में बताना होगा। यदि आप ऐसा नहीं कर सकते तो आपका ज्ञान प्रेम नहीं है। ज्ञान और प्रेम में इतना गहन सम्बन्ध है। सबको यह बताने की आपकी इच्छा करती है कि मुझे आत्मसाक्षात्कार मिल गया है। आपकी इच्छा ये बताने को करती है कि आप आत्मसाक्षात्कारी हैं लेकिन आप ऐसा नहीं कर पाते कि कहीं लोग आपको अहंकारी न मान बैठे। ठीक है, किसी अन्य तरीके से आप उन्हें बता सकते हैं कि आपके पास ये ज्ञान है।

आपका ज्ञान यदि झूठा है तो आपको अहं हो सकता है। आप सोच सकते हैं कि,"मैं बहुत कुछ जानता हूँ, मैं इसके विषय में जानता हूँ, मैं कालीनों की रंग-रंगत आदि के विषय में सब जानता हूँ।" किसी भी तुच्छ चीज़ के विषय में यदि आप जान जाते हैं तो आप समझते हैं, आप बहुत महान हैं। मूर्खता के कारण आप समझते हैं कि ये ज्ञान प्राप्त करना बहुत बड़ी उपलब्धि है।

अब हम समझ पाए हैं कि विश्व भर के सभी प्रकार के ज्ञान प्राप्त करके हमने क्या उपलब्धि पाई है। कुछ नहीं। युद्ध हो रहे हैं, सभी प्रकार का विध्वंस हो रहा है। मैंने इस जार्ज को दूरदर्शन में देखा। विश्व भर में एक ऐसी हवा फैली हुई है जो व्यक्ति के कार्यों को देखे समझे बिना ही उनकी हत्या कर रही है, उन्हें नष्ट कर रही है। परन्तु वह (परम चैतन्य) है और वह भली-भांति कार्य कर रहा है। तो क्या वह समझता नहीं है? या वह सब समझता है और लोगों को सुधारने के लिए कुछ न कुछ करता रहता है। इसका भी हमें पूरा विचार होना चाहिए। कल जब मैं यहां आई तो जोरों से बारिश हो रही थी। मैं जब आकर बैठी तो बारिश रुक गई और कार्यक्रम के समाप्त होने तक रुकी रही, जब तक मैंने अपना प्रवचन समाप्त नहीं किया, वर्षा नहीं हुई। परन्तु अचानक जब आप लोगों ने तालियाँ बजानी शुरु की तो यह भी तालियाँ बजाने लगी। ये सब इस प्रकार हुआ। अत: प्रकृति भी जानती है कि आप कौन हैं? परन्तु प्रकृति को जानना आपके लिए भी आवश्यक है। यह महत्वपूर्ण बात है। प्रकृति आपके आध्यात्मिक स्तर के अनुसार ही कार्य करेगी। आश्चर्य की बात है, मुझे सदैव यही लगा कि आध्यात्मिकता के स्तर नहीं हो सकते। मैंने सोचा था कि एक बार आत्मसाक्षात्कार यदि

आप पालें तो बस हो गया। परन्तु बाद में मैंने देखा कि यह बात गलत थी। वास्तव में ऐसा नहीं है। आत्मसाक्षात्कार पाने के पश्चात् भी, मुझे लगा लोगों को उन्नत होने में बहुत सी बाधाएं हैं। बहुत से प्रलोभन उन्हें पतन की ओर खींच रहे हैं। अत: व्यक्ति को भिन्न चक्रों और भिन्न नाड़ियों पर कार्य करना चाहिए। किसी भी तरह से स्वयं को निपुण कर लें क्योंकि केवल आन्तरिक निपुणता ही आपको यह ज्ञान उपयोग करने का अधिकार देगी।

जैसा मैंने आपको बताया था। यह निपुणता प्राप्त करने के दो तरीके हैं। पहला यह कि आप प्रतिक्रिया न करें। **प्रतिक्रिया करना मानवीय स्वभाव है; पूर्णतया मानवीय परन्तु यदि आपने अतिमानवीय (Super Human) बनना है तो आपको प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए। प्रतिक्रिया न करने से आप उन्नत होंगे, निश्चित रूप से आप उन्नत होंगे परन्तु यदि आप प्रतिक्रिया करते हैं तो आप उन्नत नहीं हो सकते क्योंकि आप किसी ऐसी चीज़ के दबाव में कार्य कर रहे होते हैं जो आपकी आत्मा नहीं हो सकती है।** मान लो, मैं इस कालीन को देख रही हूँ। इसका रंग तथा अन्य गुणों के बारे में मुझे ज्ञान है। इस विषय पर यदि मैं प्रतिक्रिया कर उठूं तो हो गया समाप्त! मेरे प्रतिक्रिया करने का अर्थ ये होगा कि मुझमें न्यायविवेक नहीं है और यदि मैं इसके प्रति प्रतिक्रिया नहीं करती तो मैं यह समझ पाऊंगी कि इस कालीन में चैतन्य लहरियाँ हैं या नहीं। बस इतना ही। क्या इसमें से चैतन्य लहरियाँ निकल रही हैं या नहीं। अब ये चैतन्य लहरियाँ है क्या? यह प्रेम है। संचारशीलता इस प्रकार है-यदि प्रकाश हो तो आप चीजों को देख सकते हैं आपके चीजों को देख पाने का अर्थ यह हुआ कि प्रकाश है। प्रकाश आपको प्रत्यक्ष ज्ञान देता है। चीजों को देख के लिए दृष्टि देता है। इसी प्रकार आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति के पश्चात् चैतन्य लहरियाँ प्रकाश ही की तरह से बहने लगती हैं और उनके प्रकाश में आप देख सकते हैं कि अच्छी चीज़ क्या है बुरी चीज़ क्या है? परन्तु कई बार आप साधारण मनुष्यों वाले मापदण्ड अपनाते हैं। जैसे आप किसी घर में गए, वाह! बहुत अच्छा घर है, बहुत ही अच्छा। वहाँ पड़ी सभी चीजों को देखकर आप प्रसन्न हो उठते हैं, परन्तु उस घर की वास्तविकता क्या है? इसकी चैतन्य लहरियाँ अच्छी हैं या बुरी? यह रहने योग्य है भी कि नहीं? जैसे उस दिन इन्होंने मुझे कहा कि मिलानों में इन्हें एक बहुत अच्छा स्थान मिल सकता है, मिलानों में बहुत सस्ते किराए पर। मैंने पूछा, यह इतना सस्ता क्यों है? तुरन्त मैंने उस स्थान की चैतन्य लहरियाँ महसूस की। उनसे पूछा कि क्या उन्होंने जाकर वहाँ की चैतन्य लहरियाँ महसूस की हैं? वे वहाँ गए और पाया कि वह स्थान गर्म लहरियों से जल रहा था। तब उन्हें पता लगा कि वहाँ पर कई वर्षों तक एक मठ था। मैंने कहा, यह स्थान आपके रहने के योग्य नहीं है। आपको कोई अत्यन्त शुद्ध स्थान खोजना पड़ेगा। किसी गरीब आदमी का घर इस सुखों से परिपूर्ण स्थान से कहीं अच्छा हो सकता है। तो जो भी कुछ आप कर रहे हैं। उसको समझने के लिए आपको चैतन्य लहरियों का उपयोग करना चाहिए।

इसमें भी आप भ्रमित हो सकते है। चैतन्य लहरियाँ महसूस करके कुछ लोग मुझे बताते हैं, "श्रीमाताजी मैंने चैतन्य लहरियों पर महसूस किया है कि मुझे इस व्यक्ति से विवाह कर लेना चाहिए।" मैंने पूछा, "क्या तुमने चैतन्य लहरियाँ महसूस की?" "जी, श्रीमाताजी मैंने

श्री गणेश पूजा, ओ० एन० जी० सी० आफिसर क्लब, मेहसाना, 1998

पब्लिक प्रोग्राम, फरवरी 1999, मुम्बई

भली-भांति चैतन्य-लहरियाँ महसूस की और मुझे इस पुरुष से विवाह कर लेना चाहिए।" मैं जब उस पुरुष को देखती हूँ तो मुझे उसमें भूत दिखाई पड़ता है। मैंने कहा, हे परमात्मा, इस महिला ने किस प्रकार उसकी चैतन्य लहरियाँ महसूस कीं! तो आपके निर्णय में क्या रखा है? इसमें शुद्ध ज्ञान का पूर्ण अभाव है।

आप देखें वे किस प्रकार जुड़े हुए हैं। तो आपको चैतन्य लहरियाँ, जो कि प्रेम है, तथा ज्ञान, पावन ज्ञान, सच्चा ज्ञान प्राप्त करना होगा। आप कह सकते हैं कि शुद्ध ज्ञान और सच्चा ज्ञान ऊर्जा की तरह से है, विद्युत की तरह से है और जिस प्रकार आप इसे महसूस करते हैं, इसे समझते हैं, इसका अस्तित्व है। यह प्रेम है। लोग प्रेम को भी नहीं समझते। किसी के पीछे वे पागल हो जाते है और कहते हैं कि, श्रीमाताजी, मुझे लगता है कि मुझे उस व्यक्ति से प्यार हो गया है और पाँच दिन बाद आकर वो कहते हैं, श्रीमाताजी मुझे उस व्यक्ति से कुछ नहीं लेना देना। क्यों? क्योंकि आपमें शुद्ध ज्ञान नहीं है। आपने चैतन्य लहरियों के माध्यम से उस व्यक्ति में शुद्ध ज्ञान महसूस नहीं किया। अब आप देखें कि यह किस प्रकार सम्बन्धित है, कहा जा सकता है कि सूर्य और धूप की तरह। दोनों में क्या भेद है? सूर्य है, जब सूर्य निकलता है तो धूप होती है। तो अन्तर क्या है? या हम कह सकते हैं कि चाँद और चाँदनी। अन्तर क्या है? इन दोनों में कोई अन्तर नहीं है। एक चाँद है और दूसरा प्रकाश। तो ये सारी चीजें अत्यन्त भ्रमित करने वाली हैं, यहाँ तक कि हम नहीं जानते कि हम इनके विषय में कितने भ्रमित हैं? और ये भी नहीं जानते कि चैतन्य लहरियाँ हमें किस प्रकार भ्रमित कर सकती हैं? क्योंकि चैतन्य लहरियाँ आ रही हैं। परन्तु कभी-कभी जब चैतन्य लहरियाँ नहीं आ रहीं होतीं तब भी स्वयं को उचित ठहराने के लिए हम कहते हैं कि हमें चैतन्य लहरियाँ आ रही हैं। हम समझते हैं कि यह बहुत अच्छा है, बहुत शानदार है। परन्तु बाद में पाते हैं कि वास्तविकता ये नहीं है। तो अब जबकि हम आत्मसाक्षात्कारी हो गए हैं, हमें इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि हमारे चारों तरफ क्या है और किस चीज़ से हम घिरे हुए हैं? ऐसी कौन सी चीज़ है जो हमें यह मानने पर विवश करती है कि यह ठीक है, अच्छा है और हमें इसे पाना है? एक बार जब आप समझने लगते हैं कि चैतन्य लहरियां शुद्ध ज्ञान हैं, इनकी प्रकृति बिल्कुल भिन्न है तो आप किसी भी व्यक्ति, परिवार, देश आदि से लिप्त नहीं होते। आपको पावन चैतन्य लहरियाँ अपने अन्दर आती हुई महसूस होती हैं। यह बहुत ही भ्रान्तिमय बात है। ये कहते हुए कि मेरी चैतन्य लहरियाँ बहुत अच्छी हैं, मुझे ये चैतन्य लहरियाँ पसन्द हैं, जब आप गन्दगी के सागर में कूद पड़ते हैं तब!

बहुत से लोगों ने मुझसे पूछा," श्रीमाताजी, ऐसा क्यों है कि हम कभी-कभी गलतियां करते हैं?" आप गलतियाँ नहीं करते आपकी अज्ञानता अन्धेरा है और इसी में फँसने के कारण आप कठिनाइयों से घिर जाते हैं। अत: हमें समझना चाहिए कि हमारे ज्ञान को भी पूर्णत: शुद्ध होना चाहिए। जिस प्रकार हमारे घर में रखा हुआ लैम्प यदि गन्दा है तो उससे प्रकाश नहीं हो सकता। इसी प्रकार आपका हृदय यदि शुद्ध नहीं है विशेषतौर पर हमारा हृदय, यदि ये शुद्ध नहीं है तो आप ठीक मान कर उल्टे सीधे कार्य करने लगते हैं, जिससे स्वयं को तथा अन्य लोगों को चोट पहुँचाते हैं। मानव-प्रकृति की यह एक आम गलती है कि मनुष्य स्वयं को महान और

दिव्य दर्शाने के लिए गलत चीजों को भी ठीक साबित करने का प्रयत्न करता है।

जैसा मैंने आपको बताया था, कुछ लोग देश का विभाजन करना चाहते हैं। ये विभाजन वे महत्व प्राप्ति के लिए करना चाहते हैं। अपनी महत्ता चाहने वाले कुछ लोग अन्य लोगों को भी भड़काते हैं और कहते हैं आइए हम स्वतन्त्र हो जाएं। स्वतन्त्र हो जाने से ये देश हमारे लिए होगा तब हम स्वयं को या देश के किसी वैभवशाली भाग को विकसित कर लेंगे। सारा पैसा और सभी कुछ तब हमारे लिए होगा। धर्म, वैभव आदि के नाम पर वे देश को विभाजित कर सकते हैं। परन्तु यदि आप देश को विभाजित कर रहे हैं तो वास्तव में आपके सम्मुख एक बहुत बड़ी समस्या खड़ी है। आपने देखा है कि जहाँ भी लोगों ने विभाजन किया है, वे एक ऐसी अंधेरी खाई में गिरे हैं जिससे निकल पाना सम्भव नहीं है। थोड़े से लोग, अहं के कारण, अलग भूमि चाहते हैं, परन्तु उनकी मृत्यु हो जाती है। उनकी मृत्यु नहीं होती, कुछ की तो हत्या कर दी जाती है और पृथ्वी का आधिपत्य पाने का यह विचार खत्म हो जाता है।

छोटी चीजों के लिए भी ऐसा ही है। हम सोचते हैं कि मेरे पास यदि यह चीज़ हो जाए तो बहुत अच्छा होगा। जिस प्रकार लोग चीजों पर कूद कर आते हैं और कहते हैं, ओह श्रीमाताजी,"ये हमारा है, ये हमारा है, इसे हम अपने लिए ही उपयोग करेंगे"। खुलमखुल्ला! वो ये भी नहीं समझते कि यह बात गलत है। एक कहता है कि ये मेरा देश है मुझे अपने देश के लिए करना चाहिए, दूसरा कहता है, ये मेरा देश है मुझे अपने देश के लिए करना चाहिए। जब तक "मैं और मेरा" है तो इसका अर्थ ये है कि ज्ञान नहीं है।

जिस प्रकार मैंने आपको बताया शुद्ध ज्ञान वह होता है जो शुद्ध प्रकाश प्रदान करता है। शुद्ध प्रकाश का अर्थ है शुद्ध चैतन्य लहरियाँ। अब चैतन्य लहरियाँ, जैसा मैंने आपको बताया, भ्रमित करने वाली भी हो सकती हैं या इनकी मात्रा भी कम या अधिक हो सकती है। एक अन्य तरीका है। आप स्वयं देखें कि किसी कार्य विशेष को आप क्यों करना चाहते हैं? मानसिक तौर पर भी आप मानसिक सूझ-बूझ के मापदण्ड उपयोग कर सकते हैं। मैं ये कार्य क्यों करना चाहता हूँ। सब लोगों को इसका क्या लाभ होगा? उस नज़रिए से यदि आप सोचना आरम्भ करें कि दूसरे लोगों को क्या लाभ होगा, इस कार्य से उन्हें क्या मिलेगा, ये कार्य मुझे क्यों करना चाहिए? तो आप हैरान होंगे कि अपने कार्य का सच्चा चित्र आपको मिल जाएगा। तो हर समय स्वयं को ऐसी अवस्था में रखें जहाँ आप साक्षी होकर स्वयं को देखें, आप स्वयं देखें कि मैं ये कार्य क्यों कर रहा हूँ? उद्देश्य क्या है? कभी-कभी कोई बन्धन भी हो सकते हैं, कोई मनोवैज्ञानिक कारण आदि भी हो सकता है। परन्तु यदि आप सावधानी पूर्वक देखना आरम्भ करें कि मैं क्यों ये कार्य कर रहा हूँ तो आप हैरान होंगे कि आपकी चैतन्य लहरियाँ आपकी अंगुलियों के सिरों पर आपको बताने लगी हैं। परन्तु कभी-कभी चैतन्य लहरियाँ भी अत्यन्त सतही रूप में आती हैं। व्यक्ति कहता है आह! मुझे चैतन्य लहरियाँ आ रही हैं, ऐसा है, वैसा है। क्या कारण है कि मैं ये बात बार-बार कह रही हूँ? यद्यपि आप मेरा इतना अच्छा परिवार हैं, इतने आशीर्वादित हैं और हमारे पास इतना ज्ञान है? हमें बहुत विवेक शील बनना चाहिए। बिना विवेक के हम ये नहीं समझ सकेंगे, कि हम क्या कर रहे हैं?

यह विवेक विकसित करने के लिए हमें क्या करना होगा? हर बार आकर वे मुझसे पूछते हैं, श्री माताजी विवेक प्राप्ति का क्या उपाय है? आपके अन्दर विवेक पहले से ही मौजूद हैं। विवेक के दाता श्री गणेश वहाँ पहले से ही विराजमान हैं। परन्तु आपको श्री गणेश को अपनाना होगा। कुछ लोगों को श्री गणेश का इतना नशा हो जाता है कि वे उनकी पहचान ही खो देते हैं। वे अत्यन्त दास प्रवृत्ति के हो जाते हैं और मानते हैं कि वे अत्यन्त महान, अत्यन्त आध्यात्मिक हैं। ये सब असत्य विचार बेकार हैं। क्या आपके गणेश आपको विवेक प्रदान करते हैं? अब आप गिनें कि आपने कितने विवेकमय कार्य किए हैं? कहाँ आपने विवेकपूर्ण निर्णय लिया? किसी कार्य को करने का विवेक आपमें था या आप इसे केवल इसलिए करते रहे कि एक विशेष प्रकार के जीवन या एक विशेष प्रकार के उत्तर की आपसे आशा की जाती थी? अत: **विवेक वो चीज़ है जो सर्वप्रथम आपको शान्ति प्रदान करती है।** आपमें यदि विवेक विकसित हो गया है तो आप शान्त हो जाएंगे क्योंकि जो कुछ भी लोग कहें, जो भी कुछ वे करें, जितनी भी आक्रामकता दिखाए, हर हाल में आप शान्त होते हैं और उस व्यक्ति, उस राष्ट्र की मूर्खता को देखते हैं और समझ जाते हैं कि किसलिए वे ऐसा कर रहे हैं? यह विवेक मानव के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि पशुओं के पास तो इतना विवेक होता ही नहीं जितना हमारे पास है। कभी-कभी नि:सन्देह, हमारे अन्दर पशुओं से भी कम विवेक होता है परन्तु अनुभव से हमें सीखना होगा कि हम गलतियाँ करते चले जा रहे हैं। अब तक बहुत सी गलतियाँ कर चुके हैं। क्या अब और भी गलतियाँ करते चले जाएंगे या अब हम विवेकशील हो जाएंगे। विवेक बाहर दिखाई नहीं देता। **किसी व्यक्ति की शक्ल देखकर आप नहीं कह सकते कि वह बुद्धिमान है। परन्तु चैतन्य लहरियों द्वारा आप जान सकते हैं कि व्यक्ति अत्यन्त विवेकशील है। वह बोले या न बोले। यदि वह बोलेगा तो किसी अत्यन्त गहन, विवेकमय एवं अच्छी चीज़ के विषय में बिना किसी दूसरे व्यक्ति को चोट पहुँचाए बोलेगा।** ऐसा स्वभाव यदि आप विकसित कर लें तो आप हर प्रश्न के प्रति विवेकशील हो जाएंगे। उदाहरण के रूप में कुछ लोग अपने बच्चों से बहुत लिप्त हैं, इतने अधिक कि वे भूल जाते हैं कि वे इस परमेश्वरी शक्ति के अंग-प्रत्यंग भी हैं, और सभी प्रकार के उल्टे-सीधे कार्य किए चले जाते हैं। उस दिन मैं एक महिला से मिली जिसका बेटा बहुत बीमार था। वह उसे अस्पताल ले गई और चिकित्सकों ने सभी प्रकार की दवाइयाँ दी। परन्तु उसकी हालत और बिगड़ गई। तब उसने मुझे टेलीफोन किया, श्री माताजी मैं नहीं जानती क्या हुआ? मैं चिकित्सक के पास गई और उसकी दी दवाइयों से बच्चे की स्थिति और खराब हो गई है। "तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया, पहले तुम चिकित्सालय क्यों गई? विवेक का अभाव। मैं जब यहाँ पर हूँ तो तुम मुझसे क्यों नही पूछते?"

यहाँ कबैला में एक ऐसी ही घटना हुई। एक बच्चा गिर गया और उसकी बाजू टूट गई। माँ ने बिल्कुल विवेक का प्रदर्शन नहीं किया। वह बच्चे को अस्पताल ले गई जहाँ डॉक्टर ने कहा कि कल इसका आप्रेशन करके हम बनावटी बाजू लगा देंगे। परन्तु पिता समझदार थे, उसने कहा, ठीक है, आज मैं बच्चे को घर ले जाता हूँ, कल हम यहाँ आ जाएंगे। रात को तीन बजे के करीब बच्चे को लेकर वह मेरे पास आया।

मैंने कहा ठीक है, मैं इसे ठीक कर दूँगी अगले दिन जब वे बच्चे को अस्पताल ले गए तो डॉक्टर ने कहा, "अब चीर-फाड़ करने की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि इसकी बाजू ठीक है।" फ़र्क देखें। एक व्यक्ति चिंतित है तो वह मेरे से पूछे बिना, मेरी राय जाने बिना डॉक्टर के पास भागेगा। वे सहजयोगी हैं फिर भी डॉक्टर के पास दौड़ेंगे। डॉक्टर जब कुछ करने लगेगा तो वे मेरे पास आएंगे।

सहजयोग में बहुत से चमत्कार घटित हुए हैं और उनमें आपको देखना चाहिए कि विवेक सहायक होता है। निःसन्देह मेरा चित्त सदैव आप लोगों पर होता है परन्तु आपको इसे अधिकार रूप में नहीं मान लेना चाहिए। आपको याचना करनी चाहिए। एक दिन मैं यूँ ही बैठी हुई थी मेरी इच्छा हुई कि मैं न्यूयार्क आश्रम को फोन करूं। प्रायः वहाँ मैं कभी टेलीफोन नहीं करती, टेलीफोन का नम्बर ढूँढकर फोन करके मैंने पूछा, "क्या बच्चा ठीक है?" वहाँ का अगुआ हैरान हो गया क्योंकि एक बच्चा पानी में गिर गया था और काफी देर तक पानी में रहने के कारण उसके शरीर में पानी भर गया था यहाँ तक कि उसके मस्तिष्क में भी पानी भर गया था। सदा की तरह एक चिकित्सक ने कहा कि बच्चा बच नहीं सकता और यदि बच भी गया तो वह सामान्य नहीं हो सकता। मैंने कहा, चिन्ता मत करो। मैं नहीं जानती थी, किसी ने मुझे बताया भी न था। आप लोग चिन्ता मत करो बच्चा पूरी तरह से ठीक हो जाएगा। वे सब हैरान हो गए कि मैंने किस प्रकार ऐसा कहा? सर्वप्रथम तो इसलिए हैरान हुए कि मुझे कैसे पता चला कि बच्चा गिर गया है और इस प्रकार का कोई बच्चा भी है, तथा मैंने ये किस प्रकार कहा कि वह पूरी तरह ठीक हो जाएगा! और बच्चा ठीक हो गया, पूरी तरह से ठीक हो गया। मुझे इसके विषय में जानकारी होने के बारे में वे हैरान थे। माँ किस प्रकार जानती है कि यहाँ कोई बच्चा बीमार है? **तो मैं कहूँगी यह शुद्ध ज्ञान है। मेरा चित्त हमेशा आप पर होता है। सदैव आप लोगों को प्रचालित करता हुआ। मैं आपके विषय में सभी कुछ इसलिए जान लेती हूँ कि मेरा चित्त सर्वव्यापी है। आपके साथ कोई भी घटना यदि होती है, कोई भी परेशानी जब आपको होती है, कोई भी परिवर्तन जब आपमें होता है तो मेरा चित्त वहां पर होता है।** तुरन्त मैं जान जाती हूँ कि कहीं कुछ खराबी है और न जाने किस प्रकार मेरा चित्त उस स्थान विशेष पर पहुँच जाता है और वहाँ के हालात को सुधार देता है। जरूरतमन्द लोगों की यह सहायता करता है। इस चित्त का मैं कुछ नहीं करती परन्तु यह चित्त विवेक है-ऐसा विवेक जो चहुँ ओर फैलता है। इस विवेक के द्वारा आप जान जाते हैं कि दूसरे व्यक्ति में या संस्था में क्या खराबी है? सहजयोग के माध्यम से ही आप ये जान सकते हैं। यदि आप जानना चाहें तो आप सभी कुछ जान जाते हैं। जिस प्रकार आप सर्वत्र प्रसारित हो सकते हैं, उसी प्रकार आप जान सकते हैं। आपको तो यदि सन्देश भेजना है तो टेलीफोन करना पड़ेगा। परन्तु मेरे लिए ऐसा करना आवश्यक नहीं है। मैं तो बस जान जाती हूँ। **यह शुद्ध अबोध विवेक की देन है। पावन विवेक शिशु सम है। यह सर्वत्र है, सन्देश भेजता है और बताता है कि मामला क्या है, समस्या क्या है?** सहजयोग से बहुत से लोग रोग मुक्त हो गए हैं। यदि वे पूछें, "श्रीमाताजी हम किस प्रकार ठीक हो गए, आपने क्या किया? क्या आपने हमारे चक्रों को देखा, क्या आपने पता लगा लिया कि हममें क्या

कमी है?" नहीं मैंने ऐसा नहीं किया, इसे छोड़ दिया, अपने विवेक में। मैं ये सब चीज़ें परम चैतन्य पर छोड़ देती हूँ। यही रहस्य है। मुख्य बात ये है कि क्या आप अपने विवेक में परम चैतन्य पर सभी कुछ छोड़ सकते हैं? यदि नहीं तो अभी तक आपने अपने अन्दर वास्तविक ज्ञान का अनुभव नहीं किया। कुछ लोगों का यही स्तर है। और मैं विश्वास नहीं कर पाती कि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् सभी लोग इस शुद्ध ज्ञान से परिपूर्ण हो जाते हैं कि नहीं। कुछ तो हो जाते हैं, परन्तु सभी नहीं, वे अनुभव से सीखते हैं। लोगों से मिलने-जुलने से सीखते हैं। परन्तु शुद्ध विवेक को पा लेना उनके लिए कठिन है क्योंकि वे परम चैतन्य पर पूरी तरह से निर्भर नहीं करते। सभी कुछ होता है केवल परम चैतन्य इसके विषय में जानता है, वही समझता है, आयोजन करता है और प्रेम करता है। यह ऐसी ऊर्जा है जो सभी कुछ करती है। परम चैतन्य सभी कार्य करता है। किस प्रकार यह सब कुछ चलाता है! किस प्रकार सभी संयोगों का आयोजन करता है!

कल मैंने आपको वर्षा के विषय में बताया। वर्षा आई और चली गई। यह विवेक था। अन्तर्जात रूप से यह जानती है कि मैं यहाँ विराजित हूँ, कार्यक्रम चल रहा है, यह रुक जाती है। फूल भी मुझे जानते हैं। आप नहीं जानते कि जब फूल यहाँ आते हैं तो इतने छोटे-छोटे होते हैं। मैं उन्हें कुछ भी नहीं करती। परन्तु वे बढ़ने लगते हैं और बढ़कर बहुत बड़े हो जाते हैं। कोई भी कह सकता है कि श्रीमाताजी वे कैसे जानते हैं? क्योंकि वे प्राकृतिक हैं और हम बनावटी। बहुत सी बनावटों को हमने जीवन का अंग-प्रत्यंग बना लिया है। सभी प्रकार के शिष्टाचार आदि, दिखावटी विनम्रता को देखें। ये सब मूर्खतापूर्ण चीज़ें, जो हमने अपना ली हैं, कभी कभी हमें शुद्ध ज्ञान से दूर कर देती हैं और शुद्ध ज्ञान के बिना हम नहीं जान सकते कि क्या हो रहा है? छोटी-छोटी- चीज़ों के लिए आप भयभीत हो जाते हैं, परेशान हो जाते हैं। सहजयोगियों को परेशान होते देखकर बहुत हैरानी होती है। साधकों में यदि कोई समस्या है और वे यदि सहजयोगी हैं तो वे साक्षी भाव से समस्या को देखेंगे। ऐसा यदि आप नहीं कर सकते तो आप सहजयोगी नहीं है। यह अभ्यास की तरह नहीं है। लोग कहते हैं कि भगवान शिव का आशीर्वाद पाने के लिए 108 बार उनका नाम जपना आवश्यक है। ये कोई आवश्यक नहीं है। भगवान शिव इसे पसन्द नहीं करते। इस तरह से नाम लिया जाना किसी को अच्छा नहीं लगता। कोई यदि आपके दरवाजे पर आकर हर समय आपका नाम पुकारता रहे तो आप उसे भगा देंगे। तो ये कोई तरीका नहीं है। ये गलत विचार हैं कि किसी देवी-देवता का नाम आप निरंतर उच्चारण करते रहें और वह आपकी सहायता करे। सर्वप्रथम आपको इतना विवेकशील होना होगा कि आप समझ सकें कि आप परम चैतन्य के अंग प्रत्यंग हैं। इसी से सभी कार्य हो जाएंगे, परम चैतन्य सभी कुछ सुन्दरता पूर्वक करता है। निःसन्देह कुछ लोगों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मैं नहीं कहती कि ऐसा नहीं है परन्तु कठिनाई इतनी कठोर भी नहीं है क्योंकि आपकी एकाकारिता यदि परम चैतन्य से है और आप जानते हैं कि वह कार्य कर रहा है तो आपको कठोरता या रुग्णता महसूस ही नहीं होगी। सभी लोग मुझे अपनी समस्याओं के विषय में लिखते हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि क्या कहूँ। आप केवल इतना बताएं कि क्या आप परम चैतन्य में विश्वास करते हैं? ठीक है,

यह जानता है कि क्या करना है, किस चीज का सृजन करता है और क्या कहना है। यह कविता, संगीत आदि किसी भी चीज़ का सृजन कर सकता है। परन्तु क्या आप सभी कुछ परम चैतन्य पर छोड़ते हैं? **विवेकशीलता का यह दूसरा सूत्र है-क्या आपमें सभी कुछ परम चैतन्य पर छोड़ने का विवेक है।** इतने अनुभवों के बाद भी? जैसे एक महिला अपनी कार से जा रही थी। उसने देखा कि कार के ब्रेक नहीं लग रहे हैं। उसकी समझ में नहीं आया कि क्या किया जाए? ब्रेक बिल्कुल समाप्त हो गए थे। कार को कैसे संभाला जाए? ये किस्सा जर्मनी का है। सभी गाड़ियाँ तेज रफ्तार से दौड़ रही थीं और महिला की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें? उसने अपना सिर स्टीयरिंग व्हील पर रख दिया और कहा कि मैं सभी कुछ परम चैतन्य पर छोड़ती हूँ"। कहने लगी, "श्रीमाताजी मैं आप पर छोड़ती हूँ, ठीक है, इतना कहने भर से जानते हो क्या हुआ? कहने लगी, "श्रीमाताजी मैं नहीं जानती कि क्या हुआ जब मैंने सिर उठाया तो देखा कि कार सड़क के एक किनारे पर खड़ी हुई थी परन्तु वहाँ कोई भी व्यक्ति न था। सभी कारें तेजी से गुजर रही थीं परन्तु किसी शक्ति ने उस कार को बड़ी अच्छी तरह से एक ओर कर दिया था। तो परम चैतन्य की कार्यशैली को समझने में ही विवेकशीलता है - किस प्रकार यह पथ-प्रदर्शन करता है, किस प्रकार सहायता करता है, किस प्रकार आपकी रक्षा करता है और किस प्रकार इस पर निर्भर होकर आप प्रसन्नता पूर्वक जीवन गुजार सकते हैं!

मेरे विचार से सहजयोग में बहुत कम सहजयोगियों की मृत्यु हुई है। उनकी आयु बहुत लम्बी होती है। उनकी असामयिक मृत्यु नहीं होती और यदि उनके अनुभव आप सुनेंगे तो हैरान हो जाएंगे। किस तरह से परम चैतन्य कार्य करता है। वे यदि जीवित न रहना चाहें तो जा भी सकते हैं। परन्तु यदि वे जीवित रहना चाहें तो परम चैतन्य उनकी इस इच्छा को देखता है और वे लम्बे समय तक जीवित रह सकते हैं। परन्तु चिरायु का यह अभिप्राय नहीं है कि आप अपने धन के चक्कर में ही लगे रहें कि आप किस प्रकार निर्वाह करेंगे, साधन क्या होगा? ये सभी बेवकूफी की बातें और चिन्ताएं आपमें आ जाती हैं। तब परम चैतन्य कहता है, ठीक है, करते रहो चिन्ता। तुमने यदि चिन्ता करनी है तो करो। जो घटित होना है हो जाएगा कोई चिन्ता की बात नहीं, जो भी कुछ घटित होना है होना है। परन्तु यदि हम परम चैतन्य पर छोड़ दें तो यह दखलन्दाजी कर सकता है। बार-बार कहते हैं कि परमात्मा पर, परमात्मा पर छोड़ दो। परन्तु मैं नहीं जानती कि परमात्मा का अर्थ क्या है। परमात्मा ही परमचैतन्य हैं। परमात्मा का अर्थ है जीवन्त परमेश्वरी शक्ति जो सभी कार्य कर रही है। तो विवेकशीलता को देखने का दूसरा तरीका ये है कि हम समझें कि इस विश्व का जर्रा-जर्रा परमात्मा ने, परमेश्वरी शक्ति ने बनाया है और इस सृष्टि का कण-कण पूरी तरह से परम चैतन्य के पथ-प्रदर्शन और उनकी देख-रेख में है। परम-चैतन्य की इच्छा के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता। यह इस प्रकार जुड़ा हुआ है, सर्वत्र विद्यमान है कि लोग समझते ही नहीं कि वे क्या कर रहे हैं और उन्हें क्या करना चाहिए था। भिन्न स्तरों पर आप घटनाएं होती देख सकते है। मान लो अब अमेरिका में कुछ घटित हो रहा है तो ये जानने का प्रयत्न करें कि अमेरिका ने अन्य देशों के साथ क्या किया। तुरन्त आपको उत्तर मिल जाएगा। परम चैतन्य पर विश्वास

करने वाले, उसके हाथों में सभी कुछ समर्पित करने वाले व्यक्ति का यह पूरा ध्यान रखता है। हम पुलिस, डॉक्टरों और इंजीनियरों के हाथ में चीज़ें दे देते हैं। वे गलतियाँ कर सकते हैं और समस्याएं खड़ी कर सकते हैं। परम चैतन्य पर सब छोड़ दें यह इतनी कुशल शक्ति है कि अपने जीवन में मैंने देखा है कि सदैव यह बहुत अच्छा कार्य करती है।

पुणे में मैं एक घर बना रही थी। वहाँ पर मुझे एक बहुत बड़ा शिलाखण्ड (Slab) बनाना था जिसके लिए तीन सौ बोरी सीमेंट की आवश्यकता थी। हमने सीमेंट मंगाया, कार्य करने वाले लोग भी आ गए, परन्तु उन्होंने कहा, सुबह जल्दी इसे शुरु करेंगे तब अगली सुबह, 24 घण्टों में यह समाप्त होगा। मैंने कहा ठीक है। कार्य सुबह पाँच बजे शुरु हुआ और शाम को पाँच बजे मैंने कहा, आओ चलें, कार्य समाप्त हो गया है। सबने पूछा, आपको कैसे पता चला? मैंने कहा, मैं जानती हूँ, आओ चलें। तो आप कल्पना करें कि बारह घण्टे में कार्य समाप्त हो गया था और मजदूर बाहर आ रहे थे। सबने कहा, 'श्रीमाताजी यह तो चमत्कार है। इतना बड़ा शिलाखण्ड इतने कम समय में किस प्रकार बन पाया?' उन्हें समझाने के लिए मैंने कहा कि हो सकता है श्री हनुमान जी ने यह कार्य किया हो। ये सब लोग, सभी देवी-देवता परम चैतन्य के अंग-प्रत्यंग हैं। आप लोग माँ की पूजा कर रहे हैं। माँ की पूजा करना सर्वोत्तम है क्योंकि सभी देवी-देवता, सभी कोई, उनके बच्चे हैं और उनकी इच्छा और आज्ञा से चलते हैं। श्री गणेश की एक कथा है, जो शायद आप जानते हैं। माँ ने श्री गणेश और श्री कार्तिकेय जी से कहा, कि आप दोनों में से जो भी पृथ्वी माँ के तीन चक्कर लगा करपहले आएगा उसे मैं इनाम दूँगी। विवेक मूर्ति श्री गणेश ने सोचा कि मेरी माँ से महान कौन है? वो जानते थे कि वे मोर वाहन वाले अपने भाई कार्तिकेय का मुकाबला नहीं कर सकते, तो उन्होंने सोचा कि मेरी माँ सबसे महान है और अपनी माँ की तीन परिक्रमाएं करके कार्तिकेय के आने से पहले इनाम जीत लिया। कार्तिकेय जब आए तो उन्हें पता लगा कि वे हार गए हैं।

तो बार-बार मैं यह बता रही हूँ कि विवेक बहुत सहायक है। परन्तु एक आधुनिक व्यक्ति के लिए सभी कुछ परम चैतन्य पर छोड़ पाना बहुत कठिन है। वह दो जमा दो भी नहीं कर सकता। कम्प्यूटर आदि मशीनों ने मनुष्य को इतना दास बना लिया है कि वह हिसाब-किताब के योग्य नहीं रहा। मैं कम्प्यूटर या कैलकुलेटर चलाना नहीं जानती परन्तु यदि आप मुझसे पूछें कि यह हिसाब कितना होगा तो मैं तुरन्त बिल्कुल ठीक बता दूंगी। जो मैं कहूंगी वही ठीक होगा। किसी व्यक्ति को भ्रमित करने के लिए, निश्चित रूप से, मैं कभी-कभी कुछ गलत चीज़ें कह देती हूँ। परन्तु प्राय: मैं जानती हूँ कि ठीक क्या है? मेरा जानना आम लोगों सा नहीं होता। मैं तो बस जानती हूँ। इसी प्रकार आप भी बस जान लें। मैं आपको उस सीमा तक ज्ञान विकसित करने के लिए नहीं कह रही। परन्तु विवेक तो आपको विकसित करना ही होगा। विवेक का उपयोग जब आप करने लगेंगे तो यह सदैव आपको उपलब्ध होगा। कोई भी कार्य जो आप करते हैं उसमें विवेक के विषय में सोचें। आप लोगों को मेरी सलाह ये है कि जिस प्रकार आपकी माँ सारा कार्य करती है, आप सबको प्रेम करती है और जो लोग आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं उनकी भी चिन्ता करती है, उसी प्रकार आप भी सहजयोग में अधिक से

अधिक लोगों को लाने का प्रयत्न करें। आपका आचरण यदि ऐसा हो कि हर समय आप यही कहते रहें कि तुम्हें ये पकड़ है, भूत-बाधा है, तुम ऐसे हो, तुम वैसे हो तो ये ठीक नहीं है। मैंने कभी किसी से इस प्रकार व्यवहार नहीं किया। तुम्हें भी इस प्रकार नहीं कहना चाहिए। यह प्रेम नहीं है, सूझ-बूझ नहीं है। वास्तविकता ये है कि आप भी उसी व्यक्ति जैसे थे और अब आपको ज्ञान प्राप्त हो गया है। अपना ज्ञान आपको दूसरे व्यक्ति को सुधारने के लिए उपयोग करना चाहिए न कि उसे नीचा दिखाने के लिए सुधारने का अर्थ जुबानी जमा खर्च करना नहीं है। केवल अपनी चैतन्य लहरियों के माध्यम से ही आप दूसरों को सुधार सकते हैं।

मैंने देखा है कि कभी-कभी सहजयोग का सारा कार्य इसलिए रुक जाता है क्योंकि हम बहुत अधिक व्यवस्थित हैं। महान गुरुओं की तरह से लोगों को कहानियाँ सुनाने लगते हैं जिससे वे तंग हो जाते हैं। अत: लोगों को सहजयोग के विषय में बताते हुए हमें ज्ञान का प्रसार करना है। यह महत्वपूर्ण है। ज्ञान हम अपने तक सीमित नहीं रख सकते। परन्तु ऐसा किसी महत्वाकाँक्षा के लिए, नेतृत्व पाने के लिए या किसी भी प्रकार की मान्यता प्राप्त करने के लिए नहीं करना चाहिए। अपने विवेक और ज्ञान का उपयोग हम प्रेमवश अन्य लोगों की सहायता करने के लिए करते हैं, मान्यता या पद प्राप्ति के लिए नहीं। ऐसा हम प्रेम के कारण करते हैं। मुझे विश्वास है कि यह प्रभावशाली ढंग से कार्यान्वित हो जाएगा और जिन व्यक्तियों की सहायता होगी वे आपसे बँध जाएंगे क्योंकि उन्हें सच्चा ज्ञान मिल जाएगा। मान लो कोई आकर आपसे कहता है कि मैं सच्चा ज्ञान जानता हूँ। चाहे आपको ज्ञान प्राप्त है फिर भी आप उस व्यक्ति से पूछें। वह आपको बहुत बड़ा भाषण दे डालेगा। तब आप कहें, नहीं ऐसा नहीं है, मुस्कुराते रहें, बात ऐसी नहीं है। सत्य ये है कि सच्चा ज्ञान आपके अस्तित्व का अंग-प्रत्यंग है। ये आपके अन्तर्निहित है। ये कोई ठोस पदार्थ नहीं जिसे आपने पढ़ लिया या समझ लिया, यह तो आपके अन्दर प्रकाश बन गया है। वह प्रकाश विद्यमान है। ये बताने के लिए आपका बहुत अधिक पढ़ा-लिखा, बुद्धिमान या उच्च पदाधिकारी होना आवश्यक नहीं है। इस प्रकार आपका हृदय शुद्ध हो जाएगा। हृदय में इसका निवास है।

कल्पना करें कि अन्य सारा ज्ञान मस्तिष्क में निवास करता है जबकि शुद्ध ज्ञान हृदय में विराजमान है! अत्यन्त हैरानी की बात है कि हम ये नहीं जानते कि वास्तव में हमारा हृदय मस्तिष्क को चलाता है।

हृदय के इर्द-गिर्द सात परिमल (Auras) हैं जो मस्तिष्क को इस प्रकार नियंत्रित करते हैं कि हम परम चैतन्य के हाथों में कार्य करें। जब तक आपका हृदय शुद्ध नहीं है, जब तक आपके हृदय में व्यक्ति की सुन्दर तस्वीर नहीं है जो अत्यन्त शुद्ध है, आप कोई भी कार्य मानसिक रूप से नहीं कर सकते, और अपने हृदय से यदि आप कार्य करना चाहते हैं तो आपके हृदय का अत्यन्त शुद्ध और विवेकशील होना आवश्यक है। यह एक ऐसा सत्य है जिसमें व्यक्ति को कूदना पड़ेगा-कि अपने हृदय को विवेकशील बनाना है। उदाहरण के रूप में किसी से बहुत अधिक लिप्त होना, किसी व्यक्ति विशेष से एकाकारिता करना दर्शाता है कि आपका हृदय शुद्ध नहीं है। इसमें बहुत से बन्धन हैं, अपने हृदय को पूरी तरह से खोल लें, क्योंकि कहा

जाता है कि देवी का निवास हृदय में मध्य हृदय में वे इसलिए विराजमान हैं क्योंकि वे अत्यन्त संतुलित हैं। शक्ति के रूप में वे मध्य हृदय में विराजित हैं और आपकी सभी इच्छाओं को पूर्ण करती है। देवी आपके अन्दर स्थापित हो जाती है और जिस प्रकार श्लोकों में कहा गया है वे ज्ञान, स्मृति, निद्रा तथा भ्रान्ति के रूप में आपके अन्दर स्थापित हैं। वे ही हमें भ्रम में डालती हैं क्योंकि अभी तक हम पूर्ण नहीं हैं। हमें परिपक्व होना है। जब तक हम परिपक्व नहीं हुए हैं यह माँ (देवी) स्वयं आपको भ्रम में डालती हैं और आपके इर्द-गिर्द लीला करती हैं ताकि आप विवेक सीख सकें। तो व्यक्ति को समझना है कि देवी आपके इर्द-गिर्द लीला कर रही हैं इसलिए आपको चाहिए कि अत्यन्त सावधान रहें, उनकी माया में न फँसे। उनकी माया में यदि आप फँस गए तो गोल-गोल घूमते रहेंगे, कहीं पहुँच न पाएंगे।

अत: भ्रान्ति रूपी यह शक्ति अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आप इसे भ्रान्ति कह सकते हैं या वह शक्ति जो एक नाटक का सृजन करती है, जिसमें आप एक मूर्ख व्यक्ति हैं जिसे खोजा जा रहा है। भ्रान्ति का यह सृजन वे मूर्खता निवारण के लिए करती हैं। मानव क्योंकि कोई भी बात सीधे से नहीं समझता इसलिए इस भ्रान्ति की शक्ति की आवश्यकता पड़ती है। भ्रान्ति में फँसकर गोल-गोल घूमते हुए वे उस स्थिति तक पहुँचते हैं जहाँ वे समझ जाते हैं कि श्री माताजी को ये लीला ही उन्हें विवेक के इस तट तक ले आई है। अत: ये देखना महत्वपूर्ण है कि परम चैतन्य ने हमारे लिए इतना कुछ किया है। श्री माताजी ने इतना कुछ किया है। **हमें पूर्णत: उन्नत एवं प्रकाश रंजित होने के लिए श्रीमाताजी ने जो शक्तियाँ हमें प्रदान की हैं उन्हें प्राप्त करने के लिए हम स्वयं क्या करने वाले हैं, अभी तक हमने क्या किया है? ऐसा कुछ विशेष करने के लिए भी नहीं है, केवल गहन श्रद्धा और गहन सूझ-बूझ विकसित करनी होगी और ये गहनता पूरी तरह से संभव है क्योंकि अब आप उत्थान पथ पर अग्रसर हैं।**

आज कबैला में यह अन्तिम पूजा है और एक माँ के नाते मैं आपको बताना चाहती हूँ कि आप सब परम चैतन्य पर निर्भर रहें, परम चैतन्य पर निर्भर होना अत्यन्त आवश्यक है। कुछ लोगों में दूसरों को दोष देने की आदत भी है जैसे मुझे उस व्यक्ति से पकड़ आ गई, फलां व्यक्ति से पकड़ आ गई। **आप अपनी ही पकड़ में हैं, ये सब बेकार के विचार हैं। अपना सामना करें अपने बारे में जाने और स्वयं को पूर्ण बनाएं।** यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि इस समय विशेष में लोग सोचते हैं कि कुछ महान घटित होने वाला है। मैं नहीं जानती। वर्ष दो हज़ार, उनके अनुसार, कुछ महान होगा, मैं नहीं जानती, क्योंकि यह सब मानव रचित है। ये दो हज़ार वर्ष और तीन हज़ार वर्ष सब मानव की रचना है। मै स्वयं ये महसूस करती हूँ और जैसा बहुत से महान सन्तों ने भविष्यवाणी भी की है। सम्भवत: आप लोगों की सूझ-बूझ तथा विवेकशीलता के कारण, मुझे विश्वास है, इस विश्व में कोई महान घटना घटित होगी और चीज़ें सूझ-बूझ तथा आध्यात्मिकता के उपयुक्त स्तरपर लाई जा सकेंगी। क्योंकि ये अन्तिम निर्णय है और इसमें आपको अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। मेरा विश्वास है कि भविष्य के लिए कुछ प्राप्त करने का निर्णय यदि आप कर लें तो आप यह कार्य कर सकते हैं।

परमात्मा आपको धन्य करें।

आदिशक्ति पूजा, सेमीनार-1998

19 से 21 जून 1998 को परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी की कृपा से साक्षात् आदिशक्ति के रूप में उनकी पूजा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। डच, बेल्जियम, स्पेनिश तथा स्केण्डिनेविया के सहजयोगियों ने इस पूजा का आयोजन किया। हैंगर को कबैला से उठाकर कासल (किला) के समीप नदी तट पर स्थित अल्बेरा नामक रमणीय स्थान पर लाने में उन्हें खासी कठिनाई का सामना करना पड़ा। यह स्थान गाँव से तीन किलोमीटर दूर स्थित है। बृहस्पतिवार प्रातः तक वहाँ कुछ भी न था। परन्तु शनिवार साँय श्री माताजी की उपस्थिति में सभी सहजयोगियों ने वहाँ कार्यक्रम का आनन्द लिया। दो चमत्कारिक फोटो लिए गए। एक हैंगर लगाने से पूर्व और दूसरा हैंगर लगाने के पश्चात्। दूसरे फोटो में श्री गणेश जी उस स्थल को मंगलमयता प्रदान करते हुए दिखाई दे रहे हैं।

नए स्थान पर कारें खड़ी करने के लिए काफी स्थान है और आराम करने तथा खान-पान के लिए पेड़ों की पर्याप्त छाया है। नदी केवल सौ मीटर दूर है और योगियों ने अपना अधिकतर समय या तो पानी पैर क्रिया करने में या तो स्नान करने में बिताया। गाँव से बाहर स्थित होने के कारण यहाँ आइसक्रीम आदि खाने का लालच नहीं होता। पूरा सप्ताहान्त हमने सहजयोगियों के साथ बिताया।

हैंगर लगाने का कार्य शनिवार रात को बहुत देर से समाप्त हुआ इसीलिए श्री माताजी के साक्षात् में कार्यक्रम लगभग साढ़े ग्यारह बजे आरम्भ हुआ। सर्वप्रथम हमने एक सितार-वादक को सुना और उनके पश्चात् उनकी प्रसिद्ध सरोद-वादक पत्नी को। उनकी पत्नी ने जन्मोत्सव समारोह में दिल्ली में भी श्रीमाताजी के सम्मुख सरोद बजाया था। यह कार्यक्रम प्रातः तीन बजे तक चला। श्रीमाताजी ने सभी सहजयोगियों को इस प्रकार के अद्भुत संगीत को समझने की सूझ-बूझ विकसित करने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि आधुनिक युग में भारतीय लोगों ने अपनी संगीत परम्परा में दिलचस्पी खो दी है और केवल सहजयोग के माध्यम से ही यह महान् संगीत चलता रह सकता है।

तत्पश्चात् मेज़बान देशों का कार्यक्रम आरम्भ हुआ। यद्यपि उन्होंने सभी एकल प्रदर्शन रद्द कर दिए फिर भी कार्यक्रम प्रातः साढ़े चार बजे तक चला। अद्वितीय एवं गहन लय के उपयोग के लिए श्री माताजी ने स्पेन के सहजयोगियों की बहुत प्रशंसा की। बहुत सुन्दर भजन गाए गए तथा बेल्जियम सहजयोगियों द्वारा सुन्दर भरतनाट्यम का प्रदर्शन किया गया। अब सभी महिलाएं नृत्य सीख रही हैं और उन्होंने सहज भजनों के संगीत की लय पर नृत्य तैयार किए हैं। श्री माताजी ने बताया कि परस्पर मनोरंजन करना भी दैवी गुण है। हमारे सोने के समय मुर्गे बाँग देकर मुर्गियों को जगा रहे थे।

इस स्थान पर क्योंकि यह पहली पूजा थी, इसीलिए काफी गड़बड़ के कुछ क्षणों का भी सामना करना पड़ा। सप्ताहान्त में कई बार कार्यक्रम में उतार-चढ़ाव आए परन्तु अन्तिम क्षण सभी कुछ चमत्कारिक रूप से सहज एवं सुन्दर हो गया था।

पूजा का समय सात बजे सांय घोषित

किया गया। परन्तु श्रीमाताजी नौ बजे के थोड़ा सा बाद में आईं। अंकल गविडो ने रूस यात्रा की घटनाओं का वर्णन किया। श्रीमाताजी ने उन्हें इसके विषय में बताने के लिए कहा था। रूस में एक प्रसिद्ध भौतिक वैज्ञानिक हैं, जो वैज्ञानिक रूप से यह प्रमाणित कर सकते हैं कि श्रीमाताजी ही चैतन्य लहरियों का स्रोत हैं। अन्त में हर चीज का उद्‌भव उन्हीं से है। अपने प्रवचन में श्रीमाताजी ने इस वैज्ञानिक के विषय में बताया और पहली बार कहा, कि वे एक दूसरी पुस्तक लिख रही हैं, जो शीघ्र ही पूर्ण हो जाएगी।

पूजा अत्यन्त सुखद परन्तु सशक्त थी। डच योगियों द्वारा सजाई तथा रंग-रोगन की गई एक विशाल पवन चक्की इस अवसर का स्मरणीय तोहफा था। लगभग एक बजे प्रातः श्रीमाताजी ने प्रस्थान किया। देर रात होने के कारण रात को सफर करने वाले सहजयोगियों ने एक दम अपना सामान बांधा और शीघ्रता से चले गए। जिन सहजयोगियों को हैंगर में सोने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उन्हें चैतन्य लहरियों से सराबोर वातावरण ने प्रेम पूर्वक सुला दिया। पूजा का शान्त वातावरण पूरी रात और अगली सुबह तक हम पर छाया रहा। सुबह उठकर जब हम अपना सामान बांधने लगे, तब भी सुरक्षा की वह भावना हमारे रोम-रोम में बसी हुई थी और हम विश्वस्त थे, कि बिना किसी प्रयत्न के हमारे जीवन की छोटी-छोटी आवश्यकताओं की देखभाल की जा रही है। देवी की छत्र-छाया में शान्ति एवं आनन्द का अनुभव करते हुए चलते जाना कितना अद्वितीय है!

-लक्ष्मी वार्ड, जर्मनी
और नैन्सी कुमार, यू.एस.ए.

◆ ◆ ◆

विश्व सहज समाचार

दक्षिणी अफ्रीका से समाचार

दक्षिणी अफ्रीका के ग्रहम टाऊन कला समारोह में सहज कार्यक्रम आशा से कहीं अच्छे हुए। बहुत से लोगों ने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया और उपस्थित सहजयोगियों ने बहुत आनन्द लिया। परन्तु कुछ अनायोजित घटनाओं ने सप्ताह को चमत्कृत कर दिया। जुलाई में दस दिन पूरा शहर इस कला समारोह में जुटा रहता है और विश्व भर से विशेष कर दक्षिणी अफ्रीका से लोग वहाँ आते हैं।

दक्षिणी अफ्रीका के स्तर के अनुसार काफी बड़ी संख्या में सहजयोगी इस कार्यक्रम में सहायक हुए। एक बर्तानवी सहजयोगी ने कृपा करके दो महिलाओं का वहाँ आने का खर्च वहन किया, ताकि वे केवल अफ्रीकी भाषाएं बोलने वाले जिज्ञासुओं को सहजयोग के विषय में बता सकें। एक सहजयोगिनी फ्रांस से वहाँ पहुँची तथा तीस अन्य सहजयोगी दक्षिणी अफ्रीका के दुरान्त प्रदेशों से आए। एक कमरे में हमने सहज प्रदर्शनी लगाई, जहाँ भजन चल रहे थे और आत्मसाक्षात्कार दिया जा रहा था। भजन और नृत्य के दो परिचयात्मक कार्यक्रम हमने किए। एक दूरदर्शन साक्षात्कार दिया और कई

लेख समाचार पत्रों के लिए लिखे। इसी समय श्रीमाताजी का कार्यक्रम लंदन में था और दक्षिणी अफ्रीका के ग्रहम टाउन की नींव भी वहां आए बर्तानवी लोगों ने रखी थी।

बाहर से आए सभी सहजयोगी, शहर से तीस किलोमीटर दूर स्थित एक फार्म हाउस पर रुके। इस प्रकार पूरा कार्यक्रम सहज सामूहिकता में परिवर्तित हो गया। हमने वहाँ हवन किया तथा काफी नृत्य एवं संगीत हुआ। सोवेटो की महिलाएं आत्म साक्षात्कार देने में आगे रहीं।

जहाँ भी वे गई-चाहे प्रदर्शनी के स्थल पर या कार खराब होने की स्थिति में सड़क के किनारे, लोगों ने उनसे आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया और शीतल लहरियों का आनन्द लिया। उनकी गर्मजोशी, समर्पण तथा श्रीमाताजी के आदिशक्ति रूप पर पूर्ण श्रद्धा हम सबके लिए उदाहरण थी। शहर के पहले कार्यक्रम में, (Xhasa में) जब नए जिज्ञासुओं को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया तो उन्होंने अपनी मूल भाषा में हमें भजन सुनाने का निर्णय लिया। दक्षिणी अफ्रीकन राष्ट्रीय-गान गाकर उन्होंने हम सबको आनन्दित किया। दक्षिणी अफ्रीकन राष्ट्र गान में कहा है, 'परमात्मा अफ्रीका को आशीर्वादित करे', God bless Africa। इसकी एक पंक्ति में प्रार्थना की गई है कि, "हे आदिशक्ति कृपा करके अफ्रीका आइए"। Come Holy Spirit, Please come to Africa। समारोह के बहुत से अवसरों पर हमें लगा कि श्रीमाताजी वहां मौजूद हैं और बाएं स्वाधिष्ठान के गुणों-आनन्द, सृजनात्मकता एवं सन्तोष-की अभिव्यक्ति करने वाले नए दक्षिणी अफ्रीका का सृजन करने में हमारी सहायता कर रही है और हमें आशीर्वाद दे रही हैं। श्रीमाताजी आपका कोटि-कोटि धन्यवाद। दक्षिणी अफ्रीका के सहजयोगियों की शुभकामनाओं के साथ।

लिन्डा विलियम
दक्षिणी अफ्रीका।

अरूबा, वैस्टइंडीज समाचार

दक्षिणी वैस्ट इन्डीज के छोटे से टापू 'अरूबा' से यह समाचार है। निखिल और रानी वार्दे नामक दम्पति कुछ समय पूर्व अरुबा रहते थे और अपने टापू में सहजयोग प्रचार करने में प्रयत्नशील थे। गत वर्ष जब श्रीमाताजी लॉस-एन्जल्स में थीं तो उन्होंने श्रीमाताजी के दक्षिणी अफ्रीका आने का निमन्त्रण इ-मेल द्वारा भेजा। श्रीमाताजी को उनका निमंत्रण दिया गया। तब से रानी और निखिल को उनके कार्यक्रम में अपार सफलता मिल रही है।

इन गर्मियों में उन्होंने एक बहुत बड़ा कार्यक्रम किया जिसमें 350 से भी अधिक लोगों को आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ कार्यक्रम समाप्त होने के समय तक हाल पूरा भर चुका था। समय पर पहुँचना अरूबा के लोगों के लिए बड़ा कठिन कार्य है। चैतन्य लहरियां बहुत तेजी से बह रही थीं और लगभग सभी लोगों ने चैतन्य महसूस किया। कार्यक्रम में सहायता के लिए आए, कोलम्बिया के सहजयोगियों को इतने अच्छे परिणाम पर बहुत आश्चर्य हुआ। सभी कुछ छोटी से छोटी चीज़ भी स्वत: आरम्भ होती चली गई। दो दिनों के कार्यक्रमों के पश्चात स्थानीय आकाशवाणी में कार्यरत एक महिला आई और उसने आकाशवाणी पर सहजयोग पर एक वार्ता देने के लिए कहा। एक अन्य साधक ने साप्ताहिक अनुवर्ती कार्यक्रम के लिए आधे-किराए पर सभागार देने को कहा। जय श्री माताजी।

रानी एवं निखल वार्दे
अरूबा

सृजनात्मक अभिव्यक्तियाँ

प्रकाश शिशु (Children of the light) नया सी.डी

चिर प्रतीक्षित सी.डी. **Audio Tap** आडियो टेप, **Children of the Light or Dancing in the Divine Love**, का विमोचन कबैला में ष्ण पूजा (1998) के अवसर पर हुआ। इस टेप का नामकरण स्वयं हमारी परमेश्वरी माँ ने किया, इसमें बहुत सुन्दर चैतन्य-लहरियाँ हैं। इनकी रिकार्डिंग करते हुए हमें ऐसा लगा था मानो, हमारी परमेश्वरी माँ यहां साक्षात् उपस्थित होकर इस कार्य को कर रही हों।

इस टेप की रचना कनाडा के वैन्कोवर नामक स्थान पर सहजयोगियों ने किया। इसमें 'जागो कुण्डलिनी माँ', 'विश्ववन्दिता' तथा रूसी भजन **Issue Hristos** तथा विश्व भर के सहजयोगियों द्वारा लिखी गई कविताओं पर आधारित सोलह मिनट का संगीत सम्मिलित है। इसके बारे में अधिक सूचना के लिए या इसे मंगाने के लिए वैन्कोवर के किसी भी सहजयोगी से सम्बन्ध स्थापित किया जा सकता है या कैरीगल **(Carrigal) E-Mail** से भी सन्देश भेजा जा सकता है।

नया सी.डी. 'Point of Balance' (सन्तुलन बिन्दु)

अमेरिका के सहजयोगी तथा जाज **(Jazz)** गिटार वादक स्टीवन किर्बी **(Steven Kirby)** का मूल सी.डी. **'Point of Balance'** अब अमेरिका तथा कनाडा की प्रसिद्ध दुकानों जैसे **Tower, H.M.V.** और **Border** पर सुगमता से उपलब्ध हैं। इसे आर्डर देकर भी मंगाया जा सकता है। इसका सूची नंबर **A.L./73124** है। यद्यपि इसका विमोचन करने में देर हुई, फिर भी शीघ्र ही ये पूरे यूरोप में उपलब्ध हो जाएगा। आजकल ये जापान में भी उपलब्ध है। इसके निर्माता किर्बी आधुनिक जाज के अत्यन्त ही होनहार लेखक एवं वादक हैं।

डॉक्टर यू.सी. राय की यूरोप यात्रा

इटली, आस्ट्रिया, बेल्जियम और हौलेण्ड का डॉक्टर उमेश चन्द्र राय को अभिवादन। जुलाई 1998 में डॉक्टर यू.सी. राय ने इन देशों का दौरा किया। डॉक्टर राय अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग अन्वेषण केन्द्र, नवी मुम्बई, भारत के निदेशक हैं। इस अन्वेषण केन्द्र की स्थापना वर्ष 1996 में परम पूज्य माताजी श्री निर्मलादेवी ने की थी। यह अन्वेषण एवं स्वास्थ्य केन्द्र विश्व भर में केवल एक मात्र अस्पताल है जिसमें सहजयोग ध्यान-धारणा से विकसित की गई, चैतन्य लहरियों के माध्यम से रोगों का इलाज होता है। इस यात्रा में उन्होंने न केवल दैवी एवं आधुनिक दवाइयों के बारे में लोगों को अवगत कराया, उनकी सहजता एवं हार्दिक विनम्रता की भी भूरी-भूरी प्रशंसा हुई।

भारतीय चिकित्सा संसार में प्रोफेसर रॉय का नाम चोटी के लोगों में आता है। दैवी भेषज के क्षेत्र में तो वे अग्रणी हैं। भारतीय शरीर शास्त्री तथा भेषज विज्ञान संघ दिल्ली के वे अध्यक्ष थे, लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय की स्नातकोत्तर अन्वेषण समिति के चेयरमैन तथा अन्तर्राष्ट्रीय भेषज विज्ञान अकादमी के अधिसदस्य (fellow)। वे महात्मा गांधी मिशन मैडिकल कॉलेज कलाम्बोली, नवी मुम्बई के सेवामुक्त प्रोफेसर भी हैं।

विश्व स्वास्थ्य संस्थान (W.H.O.) के fellow होने के कारण वे मस्तिष्क अन्वेषण संस्थान Institute of Brain Reasearch Zurich;

शरीर विज्ञान विभाग ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय; सेक्स हॉस्पिटल मैडिकल स्कूल लन्दन; और लीड्स विश्वविद्यालय बर्तानिया के कार्डियोवस्कुलर विभाग (Cardiovaseular Department) के अतिथि प्राध्यापक थे। इसके अतिरिक्त उन्होंने भारतीय मूल चिकित्सा विज्ञान में शोध कार्य के लिए हरिओम् आश्रम अलेम्बिक पुरस्कार तथा 1997 में सहजयोग अन्वेषण तथा दिव्य चैतन्य लहरियों द्वारा पहले दर्जे के मधुमेह रोगियों की कोशिकाओं को पुनर्जीवन प्रदान करने के लिए दिव्य चैतन्य लहरियों का उपयोग करने के लिए मास्को में वलादिमीर वर्निन्दकी पुरस्कार प्राप्त किया।

वर्ष 1984 में प्रोफेसर रॉय ने सहजयोग पर श्रीमाताजी का एक प्रवचन सुना परन्तु हाथों तथा सिर से चैतन्य लहरियों के बहाव से आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होने के विषय में उन्हें विश्वास नहीं आया। अतः उन्होंने परमपूज्य श्रीमाताजी से सहजयोग पर शोध करने की आज्ञा मांगी, ताकि इसे सत्यापित किया जा सके। एक नियमित शोध का आयोजन किया गया। लेडी हार्डिंग मैडिकल कॉलेज और नई दिल्ली में उनसे जुड़े अस्पतालों के शरीर शास्त्र विभाग में तीन डॉक्टरों ने यह शोध कार्य आरम्भ किया। एक का विषय था, 'सहजयोग द्वारा कुण्डलिनी जागृति का शरीर तन्त्र पर प्रभाव' दूसरा विषय था, 'सहजयोग का उच्च रक्तचाप तथा दमा रोगियों पर प्रभाव' और तीसरा, 'मूल मिर्गी रोग उपचार में सहजयोग की भूमिका' इसके साथ-साथ मिर्गी पर शोध करने के लिए (Defence Institute of Physiology and alive sciences Delhi) दिल्ली के शरीर शास्त्र एवं समवर्ती विज्ञान के सैन्य संस्थान से सहयोग किया गया। पहले दो शोध परियोजनाओं के शोधप्रबन्ध को दिल्ली विश्वविद्यालय ने एम.डी. की उपाधि के लिए मान्यता दी और तीसरा शोध प्रबन्ध, जो कि मिर्गी रोग के उपचार पर था, को पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान की गई।

प्रोफेसर रॉय ने बताया, कि इस शोध कार्य के दौरान जो तथ्य एकत्रित किए गए, वे इतने गहन थे कि मानवीय मनोविज्ञान या मनोरोगों तथा चिकित्सा प्रणालियों की हमारी सूझ-बूझ में क्रान्ति ला सकते हैं। इन शोध-कारियों ने वास्तव में चिकित्सा विज्ञान को स्वचालित नाड़ी तन्त्र और विशेष रूप से पराअनुकम्पी (Parasympathetic) नाड़ी तन्त्र को समझने में बहुत सहायता की है। इनके कुछ अवलोकन तो मनोरोग विज्ञान अध्ययन के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं और पश्चिमी शरीर एवं मस्तिष्क विज्ञान की आधुनिक न्यूटोनियम, कारटेसियन, पैराडाइम (Newtonian, Carterian, Paradigm) को चुनौती देती हैं। इस न्यूटोनियम प्रणाली ने चिकित्सकों को मानव मनस को समझ पाने में बाधा डाली है और परिणाम स्वरूप मनोदैहिक होने के कारण बहुत से मानसिक रोगों का आधुनिक चिकित्सा पद्धति इलाज नहीं कर सकती। उच्च रक्तचाप, श्वास रोग, माइग्रेन, उदासीनता, (Depressive psychosis) आकुलता (Anxity Neurosis), हृदय शूल (Angina) अज्ञात कारणिक मिर्गी रोग (Idiopathic Epilepsy), मधुमेह रोग (Diabetes Mellitus) एवं कर्क रोग (Cancer) इस प्रकार के कुछ आम रोग हैं। इनके लिए व्यक्ति को जीवन-पर्यन्त दवाएं लेनी पड़ती हैं। बहुत से मनोदैहिक रोगों का इलाज शान्ति कारक दवाइयों (Tranquilizers) से किया जाता है, जिनके लम्बे समय तक उपयोग करने से आदमी न केवल इन पर निर्भर हो

जाता है बल्कि उसे मानसिक समस्याएं भी हो सकती हैं।

प्रोफेसर रॉय को 62 शोध पत्र पढ़ने का श्रेय प्राप्त है और उन्होंने सहज योग के चिकित्सकीय लाभ पर रूस, इंग्लैण्ड, यूरोप, आस्ट्रेलिया, अमेरिका, जापान, हांगकांग, चाइना, थाइलैण्ड एवं मैक्सिको देशों में भाषण दिए हैं। उन्होंने बताया कि ऊपर लिखित अधिकतर देशों में आधुनिक चिकित्सा विशेषज्ञों का इसके प्रति सकारात्मक रवैया है। वे इस तथ्य को पहचानने लगे हैं कि सहजयोग ध्यान-धारणा तथा सूक्ष्म चक्रों को शुद्ध करने की तकनीकें, मानसिक तनाव एवं ऊपर लिखित मनोदैहिक रोगों का उपचार करने में अत्यन्त लाभदायक है।

इटली के हम सभी सहजयोगियों ने डॉक्टर यू.सी. रॉय से उपचार की इन अद्वितीय विधियों की तीव्र इच्छा थी। एक चमत्कार हुआ, एक प्रात: जब मैंने समाचार पत्र उठाया तो ये देखकर हैरान हुआ कि डॉक्टर उमेश चन्द्र रॉय 14, 15 जुलाई को मिलान में होंगे। 16, 17 वियाना में, 20, 21 को ब्रसल्स और 23 को टयूरिन में होंगे। मिलान जन चिकित्सा सम्मेलन में, चिकित्सा पद्धति में योग के विषय में बताते हुए प्रोफेसर रॉय ने कहा कि, चिकित्सा पद्धति में योग का प्रथम प्रमाण सिन्धु घाटी की सभ्यता से ईसा पूर्व तीसरी सहस्राब्दि में प्राप्त हुआ। आधुनिक युग में सहजयोग अत्यन्त आदर्श है क्योंकि यह मानव स्वास्थ्य के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक पक्षों को छूता है तथा सहजयोग का अनुभव हम अपने मध्य नाड़ी तन्त्र पर कर सकते हैं।

जब उनसे पूछा गया कि बारह सप्ताह का सहज योग का अभ्यास करने से क्या परिवर्तन आते हैं, तो प्रोफेसर रॉय ने बताया कि गुर्दा तन्त्रिका संचार (Adernaline Neurotransmitter)(जैसा कि घटे हुए V.M.A. से प्रत्यक्ष है) रक्त दुग्धाम्ल (Blood lactic Acid), हृदय गति (Heart Rate), श्वास गति (Respiratory Rate), रक्त चाप (Blood Pressure) में निश्चित रूप से महत्वपूर्ण कमी आती है। रसायनिक चर्म प्रतिरोध (Galvanic Skin Resistance)(G.S.R.) तथा मस्तिष्क की अल्फा (उत्तम) गति-विधि (Alfa Activity of the Brain) में बढ़ोत्तरी होती है। ये सब परिणाम इस तथ्य की पुष्टि करते हैं कि सहजयोग गहन शारीरिक एवं मानसिक शान्ति प्रदान करता है तथा अनुकम्पी गतिविधि (Sympathatic Activity) को घटाता है। दूसरे शब्दों में इसका अर्थ ये हुआ कि व्यक्ति दृढ़तर हो जाता है और अति व्यस्त जीवन के तनाव एवं दबाव उसके स्वास्थ्य पर कुप्रभाव नहीं डाल पाते।

सहजयोग का दो वर्ष से अधिक समय से अभ्यास करने वाले लोगों से उपरोक्त परिमाण आंकड़े इस तथ्य को स्पष्ट करते हैं कि उनके दमन मूल्य (Control Value) उन लोगों से चालीस से पचास प्रतिशत कम है जो सहजयोग का अभ्यास बिल्कुल नहीं करते। ये निम्न दमन मूल्य सहजयोगियों को बेहतर स्थिति प्रदान करते हैं तथा उनके शरीर पर तनावों के कुप्रभावों से उनकी रक्षा करते हैं तथा सहजयोग का अभ्यास न करने वाले लोगों की तुलना में उन्हें कहीं अधिक स्वस्थ बनाए रखते हैं।

पश्चिमी देशों में वैकल्पिक विधियाँ अपनाने की दिशा में आकस्मिक झुकाव के कारण बताते हुए डॉक्टर रॉय ने कहा कि, वहाँ के चिकित्सक उच्च रक्तचाप के इलाज के लिए अपनाई जा रही विधियों के विषय में पुन: विचार कर रहे हैं क्योंकि अभी तक इस क्षेत्र में कोई सफलता

नहीं मिल सकी है और परिणामत: रोगियों को जीवन-पर्यन्त दवाइयाँ लेनी पड़ती हैं। अमेरिका में 5 करोड़ लोगों का उच्च रक्तचाप से पीड़ित होने का अनुमान है और इनमें से केवल 3.4 करोड़ लोग इसके विषय में जानते हैं। केवल 2.7 करोड़ लोग इसका इलाज करवाते है जिनमें से 50% लोगों का रक्तचाप सामान्य हो पाता है। प्रोफेसर रॉय ने बताया कि लेडी हार्डिंग मैडिकल कॉलेज नई दिल्ली में उच्च रक्त चाप रोगियों पर शोध करते हुए जो आँकड़े लिए गए उनसे पता चलता है कि तनाव मुक्ति दवाइयों के साथ-साथ सहजयोग का अभ्यास करने वाले रोगी सोलह सप्ताह में सामान्य हो गए। उन्होंने दवाइयां लेनी बन्द कर दी और केवल सहजयोग ध्यान धारणा से सामान्य रक्तचाप बनाए रख सके।

तनावग्रस्त रोगियों का एक अन्य समूह जो केवल दवाइयों पर निर्भर था, सहजयोग नहीं करता था सामान्य न हो पाया और उनके रक्तचाप को सामान्य सीमाओं में रखने के लिए उन्हें आवश्यक दवाई लेते रहनी पड़ी।

प्रोफेसर राय ने Medical Science Enlightened नामक एक पुस्तक लिखी है जिसमें उन्होंने हृदय रोग, कैंसर और एड्स सहित मनोदैहिक रोगों की रोकथाम तथा इलाज के लिए सहजयोग और चिकित्सा पद्धति का तुलनात्मक वर्णन किया है।

हाल ही में अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग अनुसन्धान एवं स्वास्थ्य केन्द्र (International Sahaja Yoga Research And Health Centre) में रोग मुक्त हुए रोगियों का उदाहरण प्रोफेसर रॉय ने दिया। दो अमेरिका के लोग जिनमें से एक विस्तृत हृदय (Dilated Cardioma) के रोगी थे और दूसरे गहन उदासीनता (Dipressive Psychosis) के रोगी थे। बेल्जियम के एक व्यक्ति उच्च रक्त चाप से पीड़ित थे, दक्षिणी अफ्रीका के एक व्यक्ति श्वास रोगी थे; एक भारतीय महिला, जो कि अण्डाशय विकृति से पीड़ित थी, उसके बाँझपने का इलाज हुआ। सहजयोग की कार्यशैली के विषय में पूछे जाने पर प्रोफेसर रॉय ने बताया कि इसका वर्णन कर पाना कठिन है परन्तु शोध आँकड़ों के अनुसार यह स्राव कण तन्त्रिका प्रसारकों (Secretions of Neurotransmitter) को आवश्यकतानुसार घटाता-बढ़ाता है तथा तन्त्रिका प्रतिरोध परिवर्तक (Neuro-Immune Modulators) का कार्य करता है और इस प्रकार असाध्य रोगों को ठीक करने में सहायक होता है। केवल इतना ही नहीं सहज योग द्वारा विकसित की गई चैतन्य लहरियाँ स्वआयोजक, स्वपुनर्जीवन प्रदायक एवं पुनर्यौवन प्रदायक हैं और जिन रोगों का उपचार करने में आधुनिक विज्ञान असमर्थ है उन्हें ये चैतन्य-लहरियां ठीक कर देती हैं।

परिणामों के आधार पर सुनिश्चित रूप से ये कह पाना संभव है कि नियमित सहजयोग ध्यान-धारणा धमनीय तनावों (Arterial Hypertension), हृदय शूल (Angina) और हृदय पेशियों (Myo Cardial Coronary) के रोगों का प्रभावशाली उपचार है। एक बार रोगी का रक्तचाप जब सामान्य सीमाओं में आ जाता है तो केवल ध्यान-धारणा से ही इसे सामान्य रखा जा सकता है। **प्रोफेसर यू.सी. रॉय ने वर्णन किया कि, "सभी प्रकार के रोगों में, गम्भीर किस्म के रोगों के इलाज भी, तीन चीज़ों पर निर्भर करता है : बीमारी किस अवस्था तक पहुँच चुकी है, आदि शक्ति (Primordial Energy) कितनी जागृत हुई है तथा रोगी अपना उपचार करने के लिए**

स्वयं कितना प्रयत्न करता है।"

सहजयोग ध्यान-धारणा के लाभकारी प्रभाव केवल शारीरिक ही नहीं होते, ध्यान-धारणा का प्रभाव मानसिक सामाजिक तथा आध्यात्मिक भी होता है। सहजयोग के अभ्यास से व्यक्ति के स्वास्थ्य में तो सुधार होता ही है, उसका आन्तरिक परिवर्तन भी होता है जो उसे अधिक सहयोगी, अधिक मिलनसार बनाता है। इससे तनाव से सम्बन्धित आचरणात्मक दोष भी दूर हो जाते हैं।

समाचार पत्रों ने प्रोफेसर रॉय के सन्देश में दिलचस्पी दिखाई है। जिन देशों में वे गए वहां के समाचार पत्रों में भी बहुत से लेख छपे हैं और अन्य बहुत से लेख छपने वाले हैं। इटली और आस्ट्रिया में उन्होंने आकाशवाणी पर साक्षात्कार दिया (Radio Populare and Danube Radio) मिलान के पत्रकार Tiziana Ricci ने डाक्टर रॉय से आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया। वियाना के कुछ पत्रकारों, जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र में सम्मेलन के समय प्रोफेसर रॉय की सहायता की थी, ने डॉक्टर रॉय से आत्मसाक्षात्कार लेने की प्रार्थना की तथा उसी स्थान पर संयुक्त राष्ट्र संघ के कुछ अन्य प्रतिनिधियों के साथ प्रति सोमवार ध्यान-धारणा के लिए एकत्र होने का निर्णय लिया।

चिकित्सा शास्त्रियों का सहजयोग में दिलचस्पी लेना अत्यन्त दिलचस्प बात थी। उनके लिए विशेष रूप से जुलाई की सभाओं का आयोजन किया गया। ट्यूरिन चिकित्सा सम्मेलन में (Turin Medical Conference) विशाल संख्या में डॉक्टरों की उपस्थिति एक उदाहरण थी। इसका श्रेय स्थानीय सहजयोगियों को जाता है जिन्होंने वहाँ के अस्पतालों तथा स्वास्थ्य केन्द्रों में पोस्टर लगाए। सम्मेलन के अन्त में एक वैज्ञानिक वाद-विवाद हुआ जिसमें ट्यूरिन के महत्वपूर्ण अस्पताल La Molinette के मधुमेह विभाग के अध्यक्ष डॉक्टर Bruna Bruni का भाग लेना विशेष रूप से महत्वपूर्ण था, उन्होंने सहजयोग के तरीकों से प्राप्त हुए परिणामों की प्रशंसा करते हुए कहा कि भविष्य में उन्हें प्रचलित उपचारों तथा योग साधना द्वारा रोगियों का इलाज करने में सहयोग की सम्भावनाएं दिखाई देती हैं। सम्मेलन के अन्त में चौदह चिकित्सकों ने सहजयोग तकनीक के ज्ञान की गहनता प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की क्योंकि इससे ऊर्जा सन्तुलन स्थापित होता है जो स्वस्थ मनोदैहिक अवस्था प्रदान करता है। कुछ चिकित्सकों ने तो पूछा कि क्या वे अभी आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर सकते हैं?

और सहजयोगी, जिन्होंने अपने तथा अपने परिवार की छोटी-छोटी समस्याओं के विषय में बात करने के लिए प्रोफेसर रॉय की उत्सुकता पूर्वक प्रतीक्षा की थी, वे प्रोफेसर रॉय में एक डॉक्टर से कहीं अधिक अत्यन्त महान योगी पाकर आश्चर्यचकित थे। इस शक्तिशाली व्यक्ति के साथ इतनी शान्ति में सामूहिक रूप से ध्यान करके वे स्वयं को धन्य मान रहे थे। कुछ भाग्यशाली लोग सीधे ही उनसे सलाह ले रहे थे। बेल्जियम में लगभग चालीस सहजयोगियों ने उनसे व्यक्तिगत रूप से भेंट की और उनके बहुमूल्य मशवरे के अतिरिक्त बेल्जियम सामूहिकता के स्तर के प्रति उनकी प्रशंसा प्राप्त की। डॉक्टर रॉय ने कहा कि ये सामूहिकता, "निःसन्देह देश को बचाने में सफल होगी।" ध्यान-धारणा के पश्चात् डॉक्टर रॉय ने कई सामूहिक सभाओं में सहजयोगी के प्रश्नों के उत्तर दिए।

एक बार फिर प्रोफेसर रॉय की प्रतीक्षा यूरोप में की जा रही है ताकि सूक्ष्म चक्रों को ठीक करने की तकनीक उनके अनुभव प्रकाश

में सीखी जा सके। दूसरी ओर जो लोग बेलापुर अस्पताल, नवी मुम्बई (जिसे श्रीमाताजी, भारत में सृजन किए गए सहज पर्दे पर एक बहुमूल्य रत्न मानते हैं) गए हैं, उन्होंने स्वास्थ्य और शक्ति प्राप्त करके बहुत लाभ उठाया है। प्रोफेसर रॉय के पथ-प्रदर्शन में इस स्वास्थ्य केन्द्र के डॉक्टरों ने सहजयोग तकनीकों का मन, बुद्धि एवं आत्मा की एकाकारिता से पूर्ण चेतना द्वारा उपयोग किया।

प्रोफेसर रॉय आपका हार्दिक धन्यवाद, प्रिय श्री माताजी आपको कोटि शत् प्रणाम।

-Paola Capudi, Italy.

प्रोफेसर रॉय से सहजयोगियों द्वारा पूछे गए कुछ प्रश्न-बेल्जियम, जुलाई 22, 1998

प्रश्न । : आलसी जिगर (Cold Liver) पर क्या हम अग्नि तत्व का उपयोग कर सकते हैं?

उत्तर : बल देते हुए डॉक्टर रॉय ने बताया कि शरीर के दाएं हिस्से पर तथा मध्य नाड़ी तन्त्र (Right Side And Central Channel) पर अग्नि तत्व का कभी इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। अग्नि तत्व का उपयोग केवल शरीर के बाएं हिस्से पर होता है और बाएं हिस्से के शुद्ध होते ही दायां भाग हल्का हो जाता है।

गलग्रन्थि (Thyroid) समस्या।

दाएं और बाएं-विशुद्धि और अगन्य-नाड़ी तन्त्रों के असन्तुलन के कारण गलग्रन्थि की समस्या उत्पन्न होती है। इन चक्रों तथा नाड़ी तन्त्रों को शुद्ध करना इस समस्या के निदान के लिए लाभकारी है।

भोजन के विषय में

खाने को केवल चैतन्यित कर लेना कीट-नाशक दवाओं के प्रभाव को निष्प्रभावित करने के लिए काफी नहीं है। यदि सम्भव हो तो व्यक्ति को चाहिए कि सजीवी (Organic) फल एवं सब्जियाँ खाए।

अल्ज़ाइमर (Alzheimer's) रोग

ये रोग मनुष्य के तान्त्रिक अणुओं (Neurons) को प्रभावित करता है और इसका अभी तक कोई इलाज नहीं है। केवल चैतन्य लहरियां ही स्थिति को सुधार सकती हैं।

मानसिक रोग

मानसिक रोगों का इलाज नवी मुम्बई के स्वास्थ्य केन्द्र जैसे सहजयोग अस्पताल में होना चाहिए। ये सुनकर हम आश्चर्यचकित हैं कि लग्जिमबर्ग, ज्यूरिक और हालैण्ड में कुछ आयुर्वेद के चिकित्सकों ने पंचकर्म नामक आयुर्वेदिक भेषज से कैन्सर के कुछ रोगियों का इलाज किया है। इन चिकित्सकों का महर्षि नामक एक गुरु है और ये काल्पनिक (Transcendental) ध्यान-धारणा करते हैं। दवाई के रूप में ये अमृत नामक बूटियां देते हैं। ये अमृत नई दिल्ली की एक कारखाने से आता है। उनका इलाज मूलाधार और स्वाधिष्ठान चक्रों को बुरी तरह से प्रभावित करता है और इन जड़ी-बूटियों को परम पूज्य श्री माताजी के फोटो के सामने रखकर भी चैतन्यित कर पाना असम्भव है।

इसके विषय में बताते हुए डॉक्टर रॉय ने कहा कैन्सर रोगियों पर सहजयोग के प्रभाव पर किए गए प्रारम्भिक शोध परिणाम अत्यन्त उत्साहवर्धक हैं। देखा गया है कि सहजयोग के अभ्यास एवं मध्य हृदय चक्र के गतिशील होने पर प्राकृतिक रूप से ऐसी कोशिकाएं उत्पन्न होती हैं जो हमारे शरीर के अन्दर विद्यमान कैन्सर कोशिकाओं को नष्ट करती हैं। अतः सहजयोग कैन्सर को घटित होने से रोकता है

तथा कैन्सर का इलाज भी करता है। किसी भी प्रणाली का व्यक्ति को अन्धाधुन्ध अनुसरण नहीं करना चाहिए। यदि हमें लगे कि मूलाधार और स्वाधिष्ठान चक्रों में रुकावट आ गई है तो ये स्पष्ट है कि ये प्रणाली आपके लिए उपयुक्त नहीं है।

मिलान जुलाई 14, 1998

प्रश्न - क्या एक ही व्यक्ति को बाएं और दाएं दोनों ओर की समस्याएं हो सकती हैं?

उत्तर - डॉक्टर राँय ने कहा कि कोई व्यक्ति बाई ओर की समस्याओं से पीड़ित हो तो अचानक उसे दाई ओर की समस्याएं भी हो सकती हैं। प्रात: काल रोगी बाई ओर (आलस्य में) होते हैं परन्तु दोपहर बाद वही रोगी दाई ओर को हो जाते है। दाई ओर को ठीक करने के लिए आपको जल या बर्फ का उपयोग करना पड़ता है या ठण्डे पानी में जल पैर क्रिया करनी पड़ती है। आप दोनों ही उपचार कर सकते है परन्तु एक ही समय पर नहीं। बाई ओर की समस्या अगर अधिक हो तो पहले बाई ओर को ठीक कीजिए और यदि दाई ओर की हो तो पहले उसे ठीक कीजिए। व्यक्ति को देख लेना चाहिए कि रोग का मूल क्या है?-बाई ओर की समस्या है या दाई ओर की और उसके अनुसार इसका इलाज होना चाहिए।

प्रश्न - उदासीनता रोग (Depression), भ्रान्ति (Hallucinations) से पीड़ित लोगों को क्या करना चाहिए, जबकि वे दवाइयाँ भी ले रहे हैं?

उत्तर - इस तरह के बहुत से रोगी हमारे केन्द्र पर आए लगभग सभी रोग मुक्त हो गए। उदासीन मनोविकृति को ठीक करने का सहजयोग सर्वोत्तम उपाय है। यहाँ मिलान में यह कार्य कठिन हो सकता है क्योंकि इसके लिए प्रबल प्रकार का इलाज आवश्यक है। आपके लिए चक्रों को शुद्ध करके स्वयं को ठीक कर पाना, असम्भव हो सकता है क्योंकि अभी तक आप निर्विचार समाधि की उस अवस्था में नहीं है। शुद्धीकरण करने वाले व्यक्ति को चैतन्य लहरियां आना आवश्यक है, रोगी स्वय इस कार्य को न कर पाएगा। परन्तु यदि चैतन्य लहरियों में रहने वाला व्यक्ति सुबह-शाम उसका इलाज करे तो उस रोगी का रोगमुक्त न होने का मुझे कोई कारण नहीं नजर आता ।

प्रश्न - दृष्टिपटल की समस्या (Retina)

उत्तर - हमें देखना पड़ता है कि दृष्टि पटल किस सीमा तक एक तरफ हटा है, परन्तु सहजयोग द्वारा बहुत से दृष्टिपटल अलगाव के रोगियों को लाभ हुआ है। जब तक मुझे ठीक से ये न पता लग जाए कि दृष्टिपटल अलगाव (Retinal Detachment) कितना है और कहाँ है, दृष्टि पटल के कौन से भाग में अलगाव है, चक्रों की स्थिति क्या है तथा कौन से चक्र रुके हुए हैं, तब तक कुछ भी कह पाना कठिन है। यह सब जान लेने के पश्चात् ही कहा जा सकता है कि व्यक्ति को कितना लाभ होगा। इसे हल्के से नहीं लेना चाहिए क्योंकि यह काफी गम्भीर बात है और इसके उपचार के लिए व्यक्ति को उचित उपाय करना चाहिए। आपको चाहिए कि दृष्टिविशेषज्ञ के पास जाएं ताकि रोग निदान किया जा सके और इसके पश्चात् किसी गहन सहजयोगी को दिखाकर उसकी राय लें और इसके पश्चात् इसका इलाज शुरु करें। लम्बे समय तक इसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए।

प्रश्न - अस्थमा (Asthma) के दौरों का इलाज।

उत्तर - श्वास रोग के दौरे दाएं हृदय की समस्या है। दाएं हृदय चक्र को साफ करना और जिगर पर बर्फ रखना सामान्य उपचार हैं। यदि आपको इन विधियों से लाभ नहीं हुआ तो

केन्द्र पर आएं और देखें कि आपको प्रभावित करने वाले अन्य क्रम-परिवर्तन कौन से हैं? और तब आपका उपचार उन पर निर्भर करेगा। श्वास की समस्या यदि बहुत गम्भीर है तो डॉक्टर की सलाह के अनुसार कार्य करें। यदि यह गम्भीर (Satus Asthamatics) नहीं है तो सहजयोग द्वारा इसे आसानी से ठीक किया जा सकता है। लेडी हार्डिंग मेडिकल कॉलेज, नई दिल्ली के सुचित्रा कृपलानी अस्पताल में अस्थमा रोग पर किए गए शोध से यह तथ्य सामने आया है।

भोजन के विषय में

प्राफेसर रॉय ने बताया कि रेशेदार, अच्छा खाना खाना बहुत आवश्यक है। जो लोग केवल चिकन, हैम, सॉसेज या अण्डे आदि ही खाते हैं और सब्जियाँ बहुत कम खाते हैं उनमें मलाशय या बड़ी आंत के कैंसर की संभावना बहुत होती है। जो लोग बहुत अधिक मटन, तली हुई चीजें और बहुत से अण्डे खाते हैं उन्हें धमनी जरठता (Arterio Soleriosis) जिसके कारण उन लोगों में हृदय शूल, उच्च रक्तचाप और हृदयाघात की संभावना बढ़ जाती है। परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी की सहजयोग की परिकल्पना के अनुसार बाईं ओर को झुकें (तामसी प्रवृति) रोगों को अधिक प्रोटीन तथा दाईं ओर को झुकें (राजसी प्रवृति) लोगों को कार्बोहाइड्रेट्स अधिक खाने चाहिए।

प्रश्न - सहजयोगी का बीमार होकर कैंसर से मृत्यु हो जाने के विषय में आप क्या कहते हैं?

उत्तर - सामान्यत: सहजयोगी का स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहता है और बहुत से मनोदैहिक रोगों तथा महामारियों को वह दूर रख सकता है। इसका कारण बहुत साधारण है। सहजयोग करने से शरीर की रक्षा प्रणाली दृढ़ हो जाती है और कैंसर सहित अन्य रोगों से व्यक्ति की रक्षा करती है। फिर भी कभी किसी सहजयोगी को कैंसर रोगी हो जाने पर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए। इसका कारण अत्यन्त साधारण है सहजयोगी बहुत करुणा एवं प्रेममय लोग होते हैं सामूहिक चेतना में होने के कारण यदि वे किसी को असाध्य रोगों से पीड़ित देखते हैं तो तुरन्त उसकी सहायता की पेशकश करते हैं। सर्वप्रथम वे आत्मसाक्षात्कार देते हैं फिर उपचार शुरु करते हैं। ऐसा करते हुए कभी-कभी वे भयंकर बायां स्वाधिष्ठान तथा एकादश रुद्र के पकड़ वाले रोगियों को ठीक करने लगते हैं जो कैंसर रोग का कारण होते हैं।

सहजयोगी यदि सहजयोग में गहन नहीं है और ऐसे रोगी को ठीक करने से पूर्व अपने बचाव के पर्याप्त उपाय नहीं करता तो वह पकड़ जाता है और उसे कैंसर हो सकता है। यदि मेरी याददाश्त ठीक है तो श्रीमाताजी ने कहा है कि सामान्य रूप से कैंसर और मानस रोग (Schizo Phreania) के रोगियों का इलाज सहजयोगी न करें। अच्छा होगा कि ऐसे रोगियों को अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग स्वास्थ्य एवं अनुसंधान केन्द्र जाने की सलाह दी जाए। इसका पूरा पता निम्नलिखित है:-

अन्तर्राष्ट्रीय सहजयोग अनुसंधान एवं स्वास्थ्य केन्द्र, प्लाट नम्बर-1, सैक्टर-8, सी.बी.डी. बेलापुर, नवी मुम्बई, भारत-400614

इज़राइल दिव्य चमत्कार

इज़राइल की पवित्र भूमि पर आध्यात्मिकता का एक नया आयाम आरम्भ किया गया। परमेश्वरी माँ के मंगलमय चित्त के साए में इज़राइल और विश्व के अन्य भागों से आए हुए सहजयोगियों ने महान पैगम्बरों और भगवान ईसा मसीह के

दिव्य अवतरण से आशीर्वादित इस भूमि के जिज्ञासुओं की आध्यात्मिक पिपासा को शान्त करने में तीन दिन का समय लगाया।

वैकल्पिक जीवन नामक इजराइल का सबसे बड़ा मेला इस गतिविधि का स्थान था। तेरह सहजयोगियों के समूह ने निरन्तर आत्मसाक्षात्कार प्रदान करने का कार्य किया। इजराइल के पावन लोग चार लाइनों में खड़े होकर आत्मसाक्षात्कार के लिए शान्ति पूर्वक अपनी बारी की प्रतीक्षा करते रहे। सभी का एक ही प्रश्न था कि क्या तनाव से मुक्त होकर निर्विचारिता प्राप्त करके शान्तिमय हो जाना सम्भव है? थोड़ी ही देर में उन्होंने महसूस किया कि यह कार्य कितना सहज एवं साधारण है। सहजयोगियों को भी ये लगा कि आत्म साक्षात्कार देना बहुत आसान है, सम्भवतः लोगों की गहन जिज्ञासा और श्री माताजी के उन लोगों पर चित्त के कारण ऐसा हो पाया। प्रतिदिन लगभग तीन सौ-चार सौ लोगों ने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया। समय के अभाव के कारण हम केवल आत्मसाक्षात्कार दे पाए और अधिक जानकारी के लिए लोगों से अनुवर्ती कार्यक्रमों में आने की प्रार्थना की। हमारे आश्चर्य की सीमा न रही कि नब्बे (90) साधकों से भी अधिक लोग अब अनुवर्ती कार्यक्रमों में जा रहे हैं।

मेले में हमें बड़े दिलचस्प अनुभव हुए। आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् एक व्यक्ति ने हमें बताया कि उसने अपनी रीढ़ में शीतल वायु के वेग को सीधे घूमते हुए ऊपर जाता हुआ महसूस किया है। एक अन्य व्यक्ति ने एक सहजयोगी से पूछा कि क्या वह उसकी उदासीनता रोग (Depression) ठीक करने में सहायता कर सकता है। आत्मसाक्षात्कार के तुरन्त पश्चात् अपने अन्दर हुए परिवर्तन से वह बहुत हैरान हुआ और उस योगी को धन्यवाद करके अपने अन्तर्परिवर्तन को देखने के लिए वह जीव-प्रतिपुष्टि स्थान (Biofeed back stand) पर गया। परिणाम सामान्य मनुष्य से पाँच बिन्दु जमा (Five Points Positive) था। बहुत से अन्य लोगों ने भी आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् स्वयं को तनावमुक्त और शान्त पाया।

बाद में देश की एक सुन्दर यात्रा में हमें मार्ग पर आत्मसाक्षात्कार देने के और अवसर प्राप्त हुए। गलीली झील (Lake of Galilee), जहां कभी ईसा-मसीह जल पर चले थे, दो दिवसीय संगोष्ठी इजराइल यात्रा का महत्वपूर्णतम बिन्दु था। संगोष्ठी के अन्त में हमने हवन किया जो कि अत्यन्त शक्तिशाली एवं शुद्ध करने वाला था।

बाद में हमें पता लगा कि संगोष्ठी समाप्ति के तुरन्त बाद इजराइली शान्ति समझौते पर हस्ताक्षर किए गए।

शान्तनु चैटर्जी, आस्ट्रिया।

❑ ❑ ❑

वर्ष 1999 में होने वाली शेष पूजाओं की सूची

आदिशक्ति-कुण्डलिनी पूजा	- तिथि का निर्णय अभी होना है।
स्थान	- कबैला।
मेज़बान देश	- बेल्जियम, हालैण्ड, स्पेन, स्वीडन, डेनमार्क, फ़िनलैण्ड, नार्वे।
गुरु पूजा	- तिथि - 30-31 जुलाई और 1 अगस्त।
स्थान	- कबैला।
मेज़बान देश	- इटली।
विराट पूजा	- तिथि का निर्णय अभी होना है।
स्थान	- कबैला।
मेज़बान देश	- उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका।
गणेश पूजा एवं विवाह समारोह	- तिथि का निर्णय अभी होना है।
स्थान	- कबैला।
मेज़बान देश	- आस्ट्रेलिया, सुदूर पूर्वी देश, रूस एवं भारत।
नवरात्रि पूजा	- तिथि का निर्णय अभी होना है।
स्थान	- कबैला।
मेज़बान देश	- इंग्लैण्ड, स्विटज़रलैण्ड, पोलैण्ड, यूक्रेन।
दीवाली पूजा	- तिथि का निर्णय अभी होना है।
स्थान	- दक्षिणी फ्रांस।
मेज़बान देश	- फ्रांस, पुर्तगाल और अफ्रीका।
ईसामसीह पूजा	- 25 दिसम्बर 1999।
स्थान	- गणपति पुले।
	- अन्तर्राष्ट्रीय।